अप्रैल 2024

मूल्य : ₹ 22

कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास को समर्पित

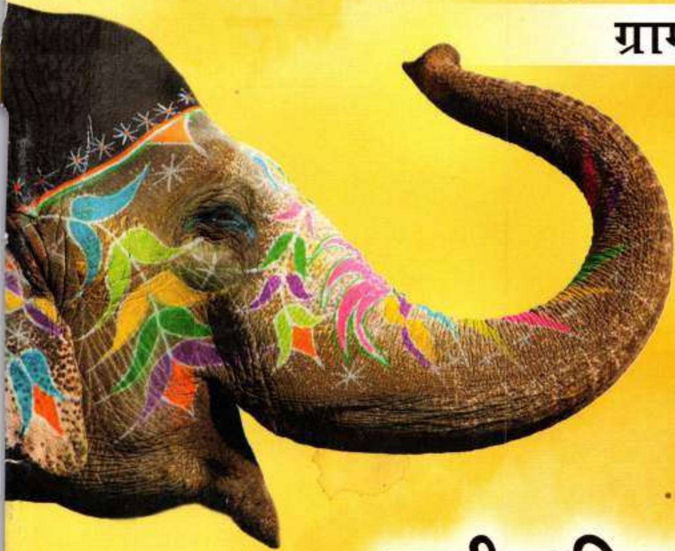

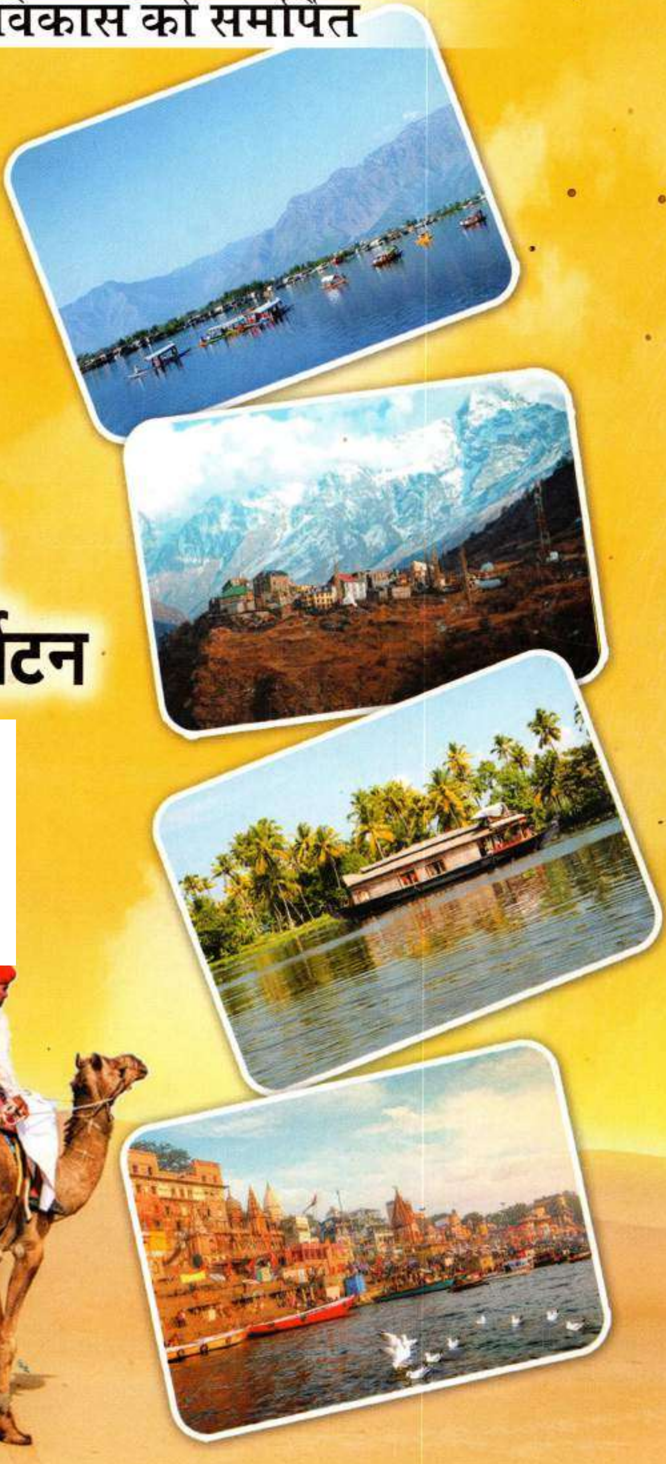

ग्रामीण विकास को समृद्ध करता पर्यटन

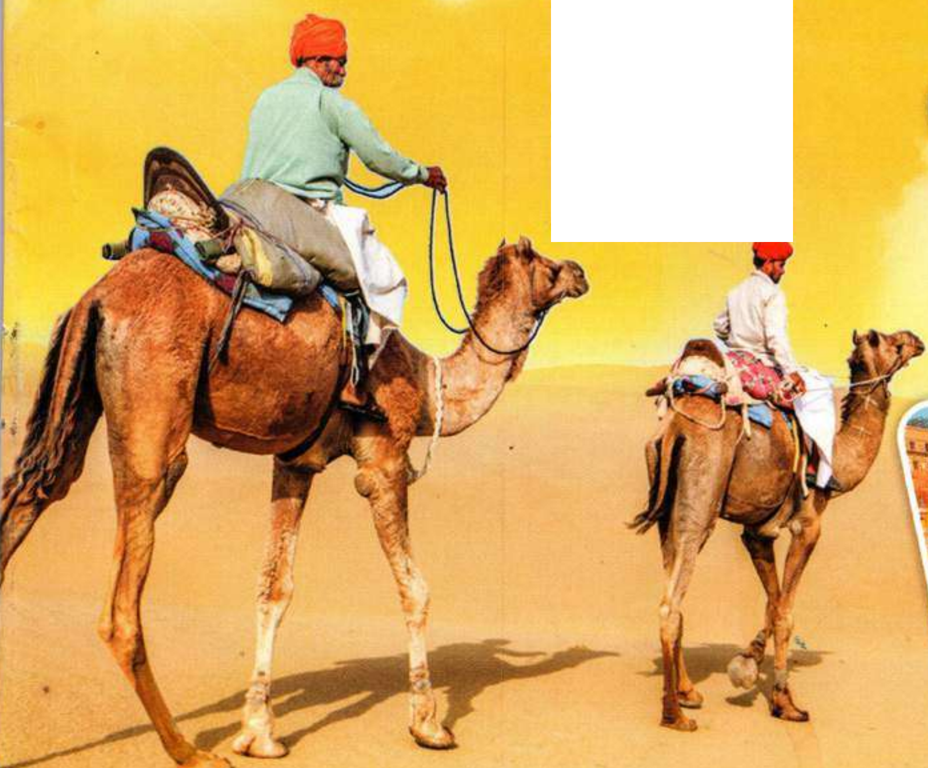

प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अब उपलब्ध

संकलन 2023

कुरुक्षेत्र (अंग्रेजी)

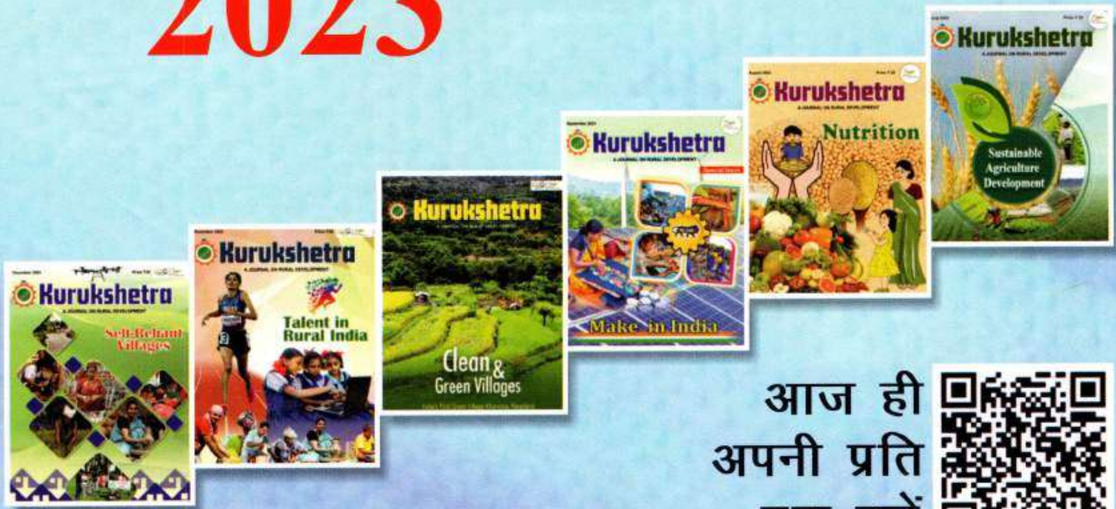

आज ही अपनी प्रति बुक करें

जनवरी से दिसंबर 2023
मूल्य : ₹300/-

संकलन ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया **www.bharatkosh.gov.in** पर जाएं।
ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ईमेल : businesswng@gmail.com
वेबसाइट : **www.publicationsdivision.nic.in**

EmploymentNews | publicationsdivision | dpd_india | DPD_India | YojanaJournal | Employ_News

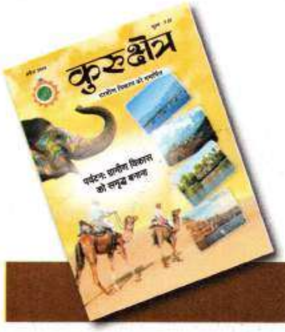

कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास को समर्पित

वर्ष : 70 ★ मासिक अंक : 6 ★ पृष्ठ : 52 ★ चैत्र–वैशाख 1946 ★ अप्रैल 2024

प्रधान संपादक : कुलश्रेष्ठ कमल

वरिष्ठ संपादक : ललिता खुराना

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : डी.के.सी. हृदयनाथ

आवरण : राजिन्द्र कुमार

सज्जा : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय

कमरा नं. 655, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन,
सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003

ई-मेल : kuru.hindi@gmail.com

वेबसाइट : publicationsdivision.nic.in

@publicationsdivision

@DPD_India

@dpd_India

कुरुक्षेत्र सदस्यता शुल्क

वार्षिक साधारण डाक: ₹ 230

ट्रैकिंग सुविधा के साथ : ₹ 434

नोट : सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है।

पत्रिका ऑनलाइन खरीदने के लिए bharatkash.gov.in/product पर तथा ई–पुस्तकों के लिए Google play या Amazon पर लॉग–इन करें।

कुरुक्षेत्र की सदस्यता की जानकारी लेने, एजेंसी संबंधी सूचना तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–

अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक, पत्रिका एकांश

प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली–110003

पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु ई–मेल : pdjucir@gmail.com या दूरभाषः 011–24367453 पर संपर्क करें।

कुरुक्षेत्र में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि सरकारी दृष्टिकोण भी वही हो। पाठकों से आग्रह है कि कॅरियर मार्गदर्शक किताबों/संस्थानों के बारे में विज्ञापनों में किए गए दावों की जांच कर लें। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषय–वस्तु के लिए 'कुरुक्षेत्र' उत्तरदायी नहीं है।

इस अंक में

ग्रामीण भारत में बहुआयामी विकास का उत्प्रेरक ग्रामीण पर्यटन 5
–डॉ. कामाक्षी माहेश्वरी, चंद्रदीप सिंह

पर्यटन को पुनः परिभाषित करते पूर्वोत्तर भारत के त्यौहार, भोजन और संगीत 11
–डॉ. तपती बरुआ कश्यप

प्राकृतिक पर्यटन के लिए ग्रामीण भारत का सुविधा-संपन्न होना ज़रूरी 16
–डॉ. वीरेंद्र कुमार पॉल

डाक विरासत को पर्यटक आकर्षणों में बदलना 21
–राशि शर्मा

पर्यटन के माध्यम से तैयार होगा ग्रामीण सांस्कृतिक पथ 28
–हेमंत मेनन

जम्मू-कश्मीर पर्यटन : वृद्धि और विकास की ओर 35
–इर्तिफ़ लोन

ग्रामीण मेले एवं उत्सव 41
–डॉ. सुयश यादव

ग्रामीण पर्यटन के विविध रंग 48

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011–24367260
दिल्ली	हाल सं. 196, पुराना सचिवालय	110054	011–23890205
नवी मुंबई	701, सी–विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नई गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवादिगुड़ा सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बैंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ विंग, केंद्रीय सदर, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2683407
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र-ए, अलीगंज	226024	0522-2325455
अहमदाबाद	4–सी, नैप्च्युन टॉवर, चौथी मंज़िल, एचपी पेट्रोल पंप के निकट, नेहरू ब्रिज कार्नर, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079-26588669

संपादकीय

भारत की संस्कृति समृद्ध और विरासत अद्वितीय है और देश की विविधता में एकता आज भी वैश्विक पर्यटकों के लिए जिज्ञासा और उत्सुकता का विषय है। निसंदेह भारत की सच्ची परंपरा, विरासत, संस्कृति, त्यौहार आदि को समझने के लिए ग्रामीण क्षेत्र सबसे अच्छी जगह है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के विकास की अपार क्षमता मौजूद है। गाँवों में पर्यटन को बढ़ावा देने से न केवल वहां की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी सुधार देखने को मिलता है।

ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय जनता को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। अन्य उद्योगों की तुलना में, यह उन्हें स्थानीय स्तर पर ही काम करने का मौका देता है जिससे वे अपने गाँव या कस्बे में ही रहकर आत्मनिर्भर हो सकते हैं। ग्रामीण भारत में पर्यटन से समृद्धि की राह तभी खुल सकती है अगर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक बुनियादी सौंदर्य और सुविधाओं को विकसित करने के लिए पर्याप्त निवेश किया जाए जिससे ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं बढ़ेंगी। बुनियादी सुविधाओं में अच्छी सड़कें, बिजली, पानी, स्वास्थ्य सुविधाएं और स्वच्छता शामिल है।

स्थानीय सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनने की सम्भावना रखते हैं जिससे स्थानीय जनता को भी लाभ होता है। स्थानीय लोग अक्सर अपने संसार की सुंदरता और महत्व को नहीं समझते हैं, इसलिए उन्हें इसके महत्व को समझाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

ग्रामीण पर्यटन की कुछ विशिष्ट विशेषताएं है। शहर की आपाधापी से दूर शांत और सौम्य प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर कम आबादी वाले ये स्थान प्राकृतिक वातावरण से युक्त हैं, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रामीण पर्यटन संस्कृति, विरासत और परंपराओं के संरक्षण पर आधारित है।

कुरूक्षेत्र का यह अंक ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास और उत्थान में पर्यटन की भूमिका और क्षमता पर केंद्रित है। इस अंक के सभी लेख ग्रामीण भारत में पर्यटन विकास से जुड़े विभिन्न पहलुओं को छूते हैं। चूंकि भारत में ग्रामीण पर्यटन आर्थिक विकास और सामुदायिक सशक्तीकरण के उत्प्रेरक के रूप में उभर रहा है।

ग्रामीण मेले और त्यौहार भी ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जो देश को आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक लाभ पहुंचाते हैं। 'ग्रामीण मेले और त्यौहार' विरासत को पुनर्जीवित करने, भारतीय कला को बनाए रखने और प्रचारित-प्रसारित कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के साथ ग्रामीण उपज की बिक्री को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर अच्छी सड़कों, बिजली और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है जो पर्यटकों के आगमन को प्रभावित करती है। इसलिए ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा उतना ही आवश्यक है जितना कि संस्कृति, विरासत और परंपराओं का संरक्षण। लेकिन बेलगाम बुनियादी ढांचे के विकास और ग्रामीण पर्यटन के निर्बाध विस्तार के कारण पर्यावरण प्रदूषण, स्थानीय लोगों के विस्थापन और बड़े कार्बन फुटप्रिंट के नकारात्मक प्रभावों की भी संभावना है। इससे बचने के लिए एक एकीकृत और सतत दृष्टिकोण ग्रामीण पर्यटन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों को होने वाले नुकसान से बचने में मदद मिल सकती है।

संक्षेप में, ग्रामीण पर्यटन का विकास केंद्र और राज्य सरकारों की प्राथमिकता होना चाहिए। नीतिगत पहल के साथ-साथ सरकार को विभिन्न स्तरों पर शिक्षा, प्रशिक्षण, और संचार के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाने का भी कार्य करना चाहिए। इसके माध्यम से हम ग्रामीण भारत में समृद्धि की संभावनाओं को बढ़ा सकते हैं।

ग्रामीण भारत में बहुआयामी विकास का उत्प्रेरक ग्रामीण पर्यटन

*डॉ. कामाक्षी माहेश्वरी
**चंद्रदीप सिंह

भारत में ग्रामीण पर्यटन आर्थिक विकास और सामुदायिक सशक्तीकरण के उत्प्रेरक के रूप में उभर रहा है। सरकारी पहल, प्रतियोगिताएं और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता जैसे यूएनडब्ल्यूटीओ पुरस्कार पोचमपल्ली और धोर्डो जैसे सफल मॉडलों पर प्रकाश डालते हैं। वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यापक विकास पर केंद्रित है और क्षमता निर्माण प्रयासों का उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन को सतत बनाए रखते हुए, स्थानीय समुदायों के कल्याण के लिए सहयोग और लचीलेपन को बढ़ावा देना है।

'ग्रामीण पर्यटन' वह पर्यटन है जो ग्रामीण इलाकों या ग्रामीण क्षेत्र में होता है। हालाँकि यह देखा गया है कि जब ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा को मौलिक स्तर पर विघटित किया जाता है तो यह अत्यधिक विविध हो जाती है। सतही तौर पर, ग्रामीण पर्यटन के मौलिक स्तर में वह क्षेत्र शामिल होता है जो भूमि उपयोग पैटर्न, क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, समुदाय की भागीदारी, क्षेत्र का अबाधित विकास और इसकी पारंपरिक और सांस्कृतिक पहचान से संबंधित है।

वैश्विक स्तर पर ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में हुई, जब शहरों में औद्योगीकरण के तेजी से विस्तार के परिणामस्वरूप ग्रामीण इलाकों ने पर्यटकों को आकर्षित करना शुरू कर दिया। 1980 के दशक से पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की 'आवर कॉमन फ्यूचर' (हमारा साझा भविष्य) पर रिपोर्ट और 2000 में सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को अपनाने के बाद से ग्रामीण पर्यटन को विकसित और विकासशील देशों द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान और विकास के एक उपकरण के रूप में देखा गया है।

भारत में ग्रामीण पर्यटन अभी भी शुरुआती चरण में है, जो विशाल पर्यटन उद्योग के भीतर एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में उभर रहा है। भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा

*लेखिका नोडल अधिकारी, केंद्रीय नोडल एजेंसी, ग्रामीण पर्यटन और ग्रामीण होमस्टे, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान में सहायक प्रोफेसर। ई-मेल : kamakshi.maheshwari@iittm.ac.in
**लेखक प्रबंधक, केंद्रीय नोडल एजेंसी, ग्रामीण पर्यटन एवं ग्रामीण होमस्टे, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।

ग्रामीण है, इन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली एक बड़ी आबादी पर्यटकों को भारत के प्रामाणिक सार की झलक दिखाने के लिए सैर पर ले जाने के लिए अछूती रहती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने, रोजगार के अवसर पैदा करने और आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने में ग्रामीण पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भारत के गाँव देश की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं, शिल्प, विरासत और कृषि पद्धतियों के भंडार के रूप में काम करते हैं। पर्यटन के माध्यम से इन स्थानीय तत्वों की क्षमता का दोहन न केवल आय उत्पन्न कर सकता है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर भी पैदा कर सकता है। यह दृष्टिकोण स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाते हुए आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है। इसके अलावा, यह ग्रामीण क्षेत्रों से संकटपूर्ण प्रवासन को कम करने, गरीबी घटाने और सतत विकास को बढ़ावा देने में योगदान देता है।

क्षमता का एहसास

भारत में ग्रामीण पर्यटन का पहला उल्लेख दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007) में देखा जा सकता है। हालाँकि इन क्षेत्रों में ढांचागत विकास कर पर्यटन के नए रूप 'ग्रामीण पर्यटन' को पहली बार प्राथमिकता ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) के माध्यम से दी गई। विशिष्ट समय सीमा के भीतर कुल 1003 परियोजनाओं में से 65 को विशेष रूप से ग्रामीण पर्यटन के लिए मंजूरी दी गई थी।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) में भारत सरकार चिकित्सा पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन जैसे पर्यटन के विशिष्ट क्षेत्रों के विकास के लिए अवसरों को अपनाने और रास्ते खोलने की कोशिश करती है।

आगे बढ़ने की रणनीति

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने भारत में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए दो रणनीतियाँ तैयार की हैं।

भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप और भारत में ग्रामीण होमस्टे को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रणनीति। दोनों रणनीतियाँ भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का लाभ उठाने के व्यापक दृष्टिकोण के साथ तैयार की गई हैं। रणनीतियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान के साथ-साथ ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ग्रामीण पर्यटन के बहुआयामी लाभ पहुँचाने के लिए रणनीतियां कई प्रमुख रणनीतिक स्तंभों पर आधारित हैं:

I. राज्य की नीतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं की बेंचमार्किंग
II. ग्रामीण पर्यटन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियां और प्लेटफार्म
III. ग्रामीण पर्यटन के लिए क्लस्टर विकसित करना
IV. ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता
V. हितधारकों का क्षमता निर्माण
VI. सुशासन और संस्थागत ढाँचा

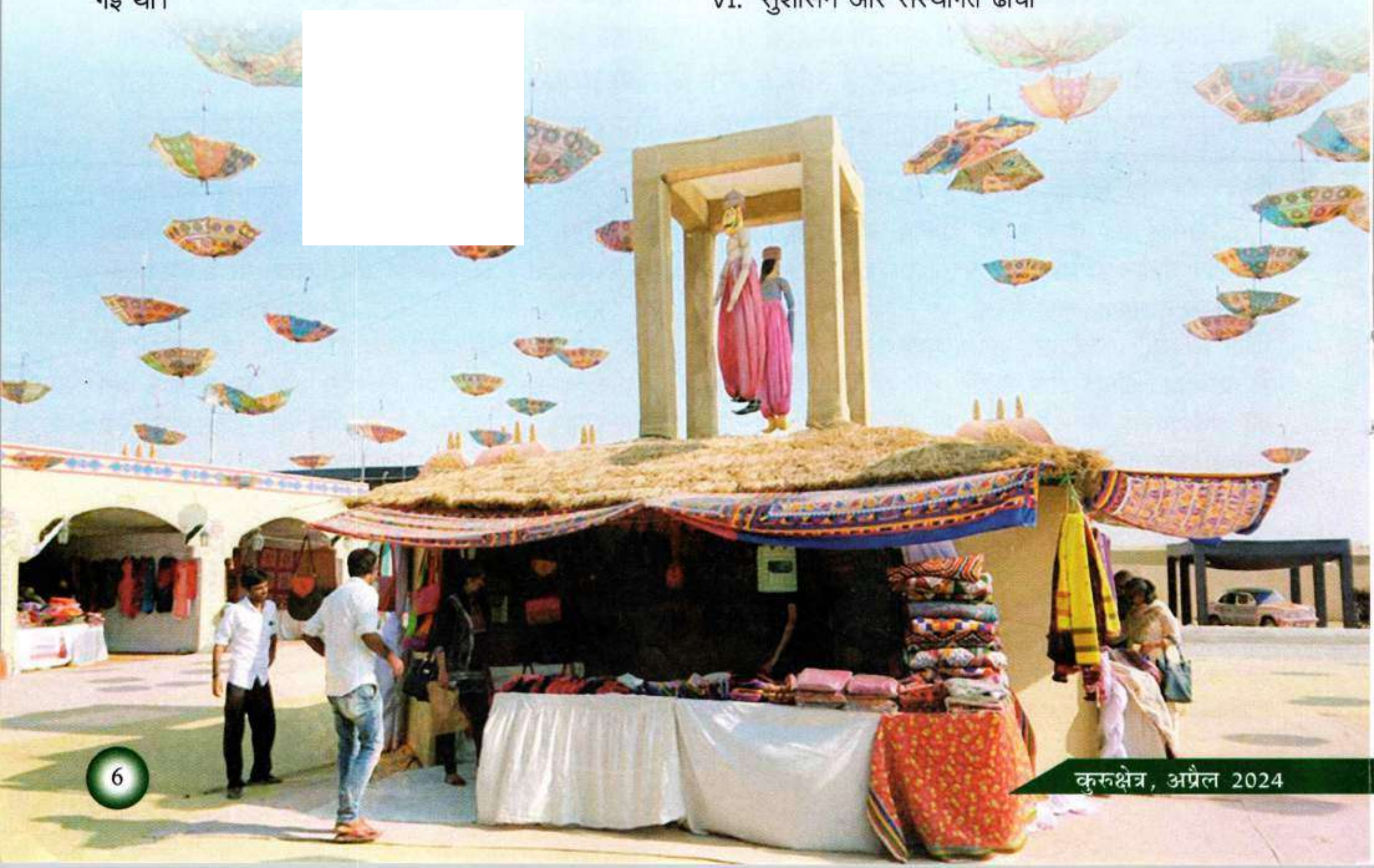

पर्यटन मंत्रालय ने रणनीतिक विकास हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद दुविधाओं को दूर करने के लिए बहुआयामी विकास के अवसर प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए रणनीति तैयार की है, जैसे व्यवसाय के द्वितीयक रूप, प्रशिक्षण और विकास, ढांचागत विकास, रिवर्स माइग्रेशन, अवसर सृजन आदि।

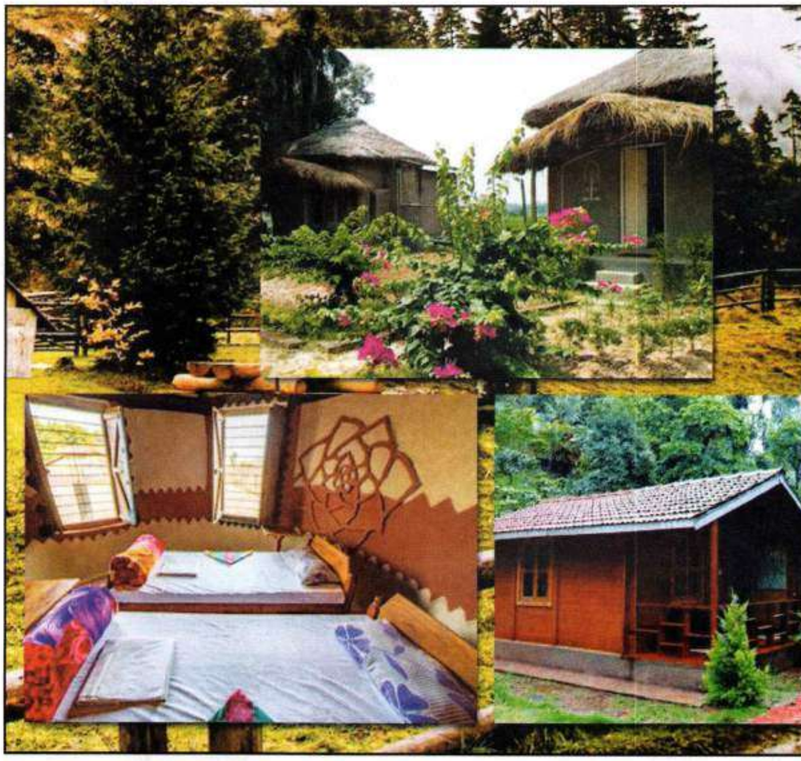

पर्यटन मंत्रालय ने राष्ट्रीय रणनीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने और विकास के लिए सहायता प्रदान करने हेतु भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान को ग्रामीण पर्यटन और ग्रामीण होमस्टे के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है।

अधिक जानने के लिए इस वेबसाइट पर जाएं: www.rural.tourism.gov.in

सामुदायिक सशक्तीकरण एवं गरीबी उन्मूलन के लिए ग्रामीण पर्यटन

पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसकी कोई सीमा नहीं है। पर्यटन का लाभ उठाने के लिए राष्ट्र सदभाव से काम कर रहे हैं। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जी-20 के रूप में एक साथ आईं। अनेक क्षितिजों पर चर्चा के बीच, ग्रामीण पर्यटन पर विशेष ध्यान देने के साथ कच्छ के रण में पहली पर्यटन कार्यसमूह की बैठक हुई। पहली टीडब्ल्यूजी बैठक का पहला पक्ष गरीबी उन्मूलन हेतु सामुदायिक सशक्तीकरण के लिए ग्रामीण पर्यटन पर था। वैश्विक स्तर के इस आयोजन में चर्चा जमीनी-स्तर पर ग्रामीण पर्यटन के परिपक्व होते गुणक प्रभाव पर केंद्रित थी। पर्यटन मंत्रालय पर्यावरण, संस्कृति, परंपरा और अर्थव्यवस्था पर ग्रामीण पर्यटन के प्रभाव को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, साथ ही, स्थानीय समुदाय को मजबूत करना ग्रामीण पर्यटन के उद्देश्य के रूप में जोड़ा गया है।

भारतीय ग्रामीण पर्यटन को सूचीबद्ध करना

भारत एक ऐसी भूमि है जिसमें ग्रामीण पर्यटन की अनगिनत संभावनाएं हैं। भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का पता लगाने के लिए सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता

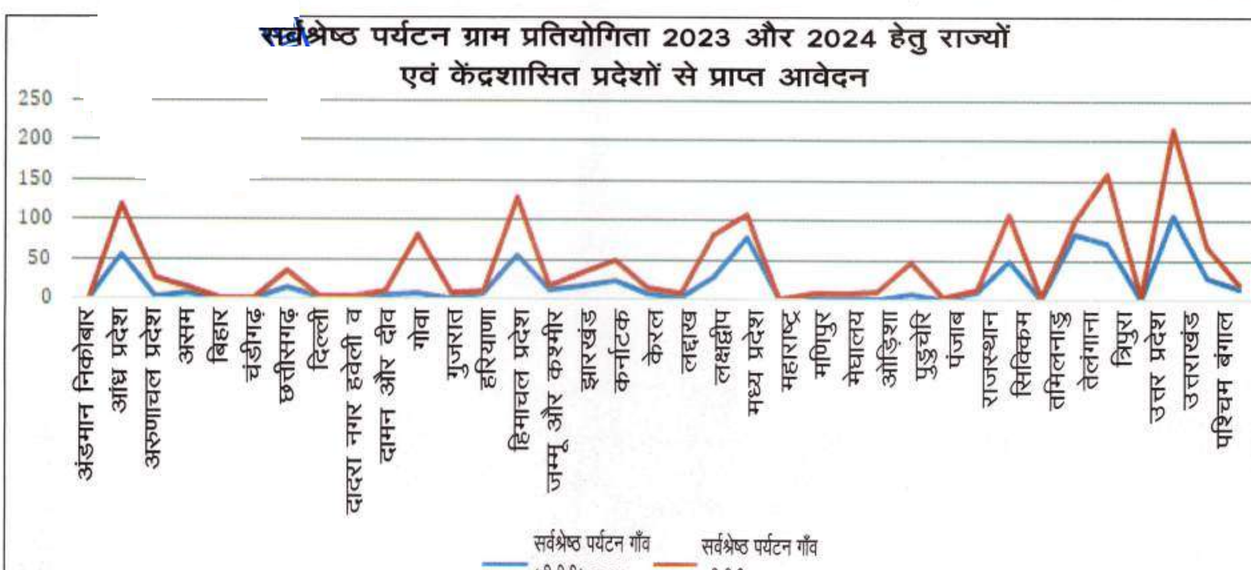

और सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण होमस्टे प्रतियोगिता शुरू की गई है।

सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता के पहले संस्करण में, 31 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 315 जिलों से कुल 795 गाँवों ने आवेदन दायर किए थे, जिनमें से 35 गाँवों को भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँवों के रूप में मान्यता दी गई थी। मान्यता प्राप्त 35 गाँवों का कई दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया गया और इन गाँवों से सर्वोत्तम प्रथाओं और मॉडलों को तैयार किया गया, जिन्हें मौजूदा मॉडलों की प्रतिकृति और गाँवों के विकास के लिए बाकी गाँवों के साथ साझा किया जाएगा।

सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता के वर्तमान संस्करण सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता 2024 हेतु कुल 991 आवेदन और सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण होमस्टे प्रतियोगिता 2024 के लिए 802 आवेदन प्राप्त हुए हैं।

ग्रामीण पर्यटन स्थलों की पहचान करने और दुनिया को भारतीय ग्रामीण पर्यटन के बारे में जागरूक करने की ग्रामीण पर्यटन के लिए एक समर्पित वेबसाइट (www.rural.tourism.gov.in) लॉन्च की गई है। यह वेबसाइट भारत में ग्रामीण पर्यटन की क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए विकसित की गई है। वेबसाइट में भारत में ग्रामीण पर्यटन स्थलों, भारत में ग्रामीण होमस्टे, ग्रामीण पर्यटन के लिए सरकार और उद्योग की पहल आदि के बारे में जानकारी है। वेबसाइट ग्रामीण पर्यटन के लिए एक भारतीय विश्वकोश के रूप में कार्य करेगी और सरकार, हितधारकों, समुदाय और पर्यटकों के बीच संतुलन स्थापित करने का भी काम करेगी।

ग्रामीण पर्यटन को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना

ग्रामीण पर्यटन विकास को संयुक्त राष्ट्र पर्यटन (पहले यूएनडब्ल्यूटीओ) से प्राप्त अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा से बल मिला है। तेलंगाना राज्य के पोचमपल्ली गाँव को वर्ष 2021 में यूएनडब्ल्यूटीओ के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता दी गई है। पोचमपल्ली बुनकरों का एक छोटा-सा गाँव है जो इकत डिज़ाइन से सजे प्रसिद्ध पोचमपल्ली रेशम के लिए जाना जाता है। यह गाँव ग्रामीण पर्यटन और उसके विकास में सामुदायिक भागीदारी के बेहतरीन मॉडलों में से एक को प्रदर्शित करता है।

वर्ष 2023 में गुजरात राज्य के धोर्डो को यूएनडब्ल्यूटीओ सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता दी गई थी। धोर्डो गाँव व्यापार, रोज़गार सृजन, निवेश, ढांचागत विकास, सामाजिक समावेशन आदि को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक चालक के रूप में पर्यटन को शामिल करने का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। साथ ही, यूएनडब्ल्यूटीओ के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में धोर्डो की मान्यता पर्यावरण जागरूक जीवन और सतत पर्यटन को बढ़ावा देने में धोर्डो की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

खोनोमा, नगालैंड और मडला, मध्य प्रदेश को यूएनडब्ल्यूटीओ के उन्नयन कार्यक्रम के तहत पहचान

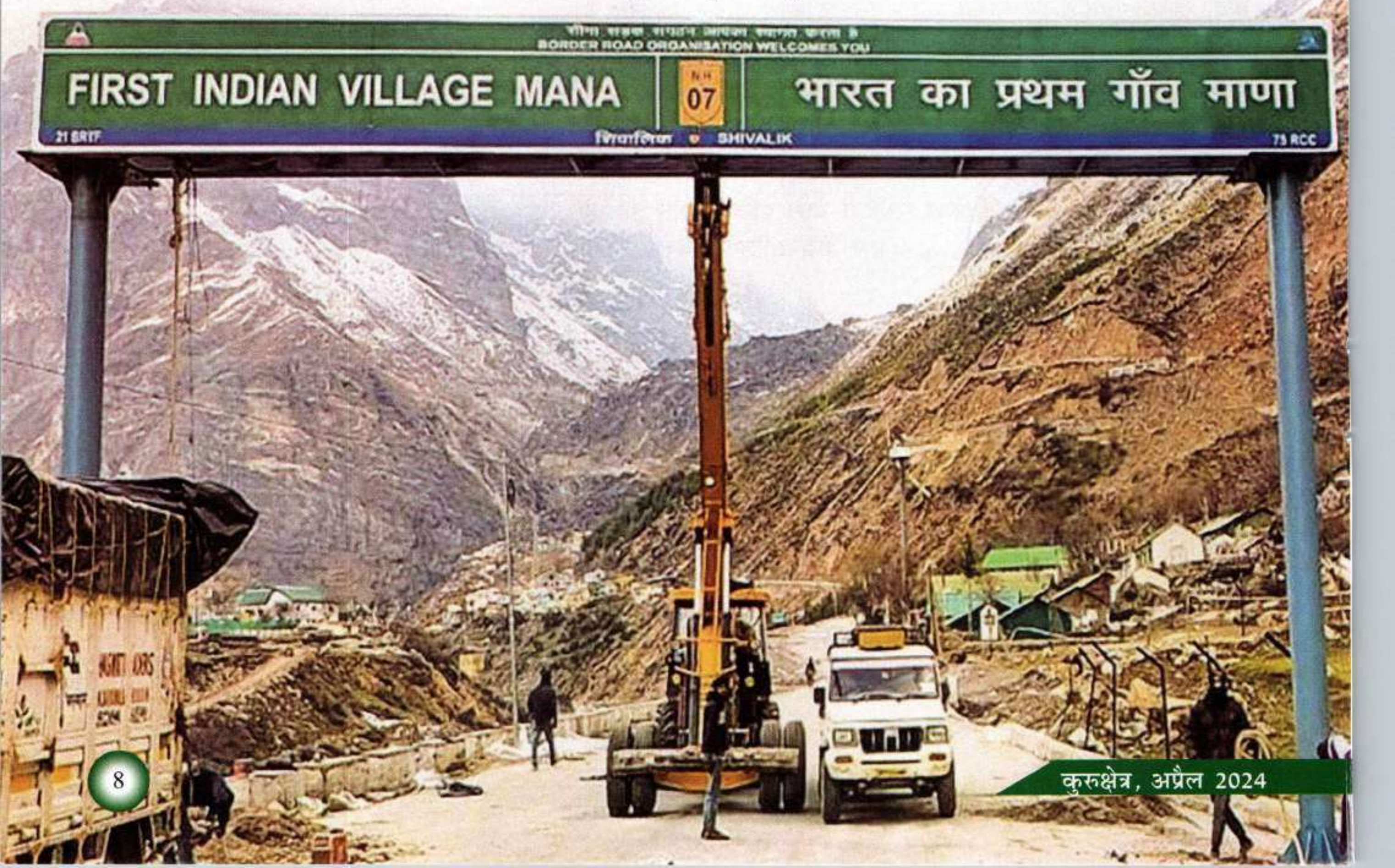

मिली थी। इन गाँवों को क्रमशः वर्ष 2022 और 2023 में पहचान मिली थी। उन्नयन कार्यक्रम के तहत इन गाँवों में, सुधार की गुंजाइश के साथ सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव बनने की क्षमता की पहचान की गई थी।

आखिरी गाँव से पहले गाँव तक

भारत का तथाकथित आखिरी गाँव, आखिरी गाँव नहीं बल्कि भारत का पहला गाँव है। इसी दृष्टि से भारत सरकार द्वारा देश के सीमावर्ती गाँवों के लिए वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम शुरू किया गया। इन गाँवों में दृढ़ निश्चयी वर्ग के लोग रहते हैं जो अपनी जीवनशैली को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। स्थानीय लोगों की आजीविका खेती, मवेशी पालन और अन्य पारंपरिक नौकरियों पर आधारित है। भारत सरकार ने सीमावर्ती समुदायों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने, बुनियादी ढांचे को उन्नत करने, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कई विकास कार्यक्रम और प्रयास किए हैं। विकास के बुनियादी क्षेत्र हैं- सभी मौसम में चालू सड़कें, पीने का पानी, 24x7 बिजली- सौर और पवन ऊर्जा पर विशेष ध्यान दिया जाना, और इंटरनेट कनेक्टिविटी, पर्यटक केंद्र, बहुउद्देश्यीय केंद्र, और स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र।

खोनोमा गाँव, नगालैंड

सामुदायिक सुदृढीकरण

ग्रामीण पर्यटन की क्षमता बढ़ाने और स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार राष्ट्रीय, राज्य और क्लस्टर स्तरों पर क्षमता निर्माण संसाधन केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य लेकर चल रही है। ये संसाधन केंद्र हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम करेंगे, ज्ञान के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करेंगे और चिकित्सकों, शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवकों के बीच बातचीत को बढ़ावा देंगे। विभिन्न स्तरों पर ये क्षमता निर्माण संसाधन केंद्र पर्यटन ज्ञान के भंडार के रूप में काम करेंगे। इस ज्ञान को स्थानीय समुदायों और एमएसएमई के लिए मॉड्यूल में तैयार कर, क्षेत्रीय उपयोग के लिए प्रासंगिक बनाया जाएगा और ज़िम्मेदार पर्यटन के लिए मानक विकसित करने के लिए उपयोग किया जाएगा। ये केंद्र स्थानीय समुदाय-आधारित पर्यटन हेतु भी मदद करेंगे, हितधारक क्षमताओं का निर्माण करेंगे, और चुनौतियों का सामना करने हेतु समुदायों और ग्रामीण पर्यटन प्रदाताओं के लचीलेपन के लिए प्रतिस्पर्धा पर सहयोग हेतु ज़ोर देंगे।

'ग्रामीण पर्यटन' विकास हेतु कई प्रकार के लाभ और रास्ते प्रदान कर ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत सरकार देश में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए प्रतियोगिताओं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान और रणनीतिक कार्यक्रमों जैसी जीवंत पहलों के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक कैनवास पर ग्रामीण पर्यटन की एक आशाजनक छवि चित्रित कर रही है। यह आर्थिक विकास के रास्ते खोलता है, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है। ये व्यापक दृष्टिकोण न केवल ग्रामीण भारत की अप्रयुक्त क्षमता को दिखाता है बल्कि इसे ज़िम्मेदार पर्यटन के लिए एक जीवंत केंद्र के रूप में भी स्थापित करता है जो लचीलेपन और ग्रामीण समुदायों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है। ❑

Publications Division
Ministry of Information & Broadcasting
Government of India

Available NOW

FUTURE-PROOF YOUR CAREER WITH EXCLUSIVE EXPERT INSIGHTS

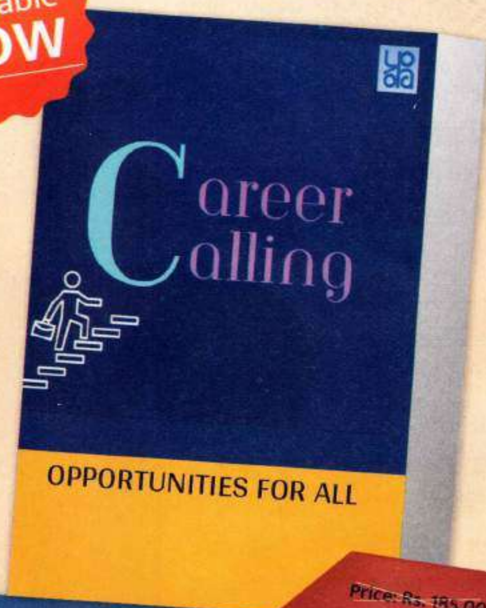

~~Price: Rs. 185.00~~
Spl. Price Rs. 166.50

Available at

www.publicationsdivision.nic.in

Book Gallery
Soochna Bhawan, Lodhi Road, New Delhi-03

www.amazon.in

For business related queries on this book, please contact:
Phone: 011 24365609 | Email: businesswng@gmail.com

@publicationsdivision | @Employ_News | @DPD_India | @dpd_india

पर्यटन को पुनः परिभाषित करते

पूर्वोत्तर भारत के त्यौहार, भोजन और संगीत

-डॉ. तपती बरुआ कश्यप

पूर्वोत्तर विविध जातियों, संस्कृतियां और परम्पराओं का केंद्र और मिलन बिंदु भी है। यह विविधता असंख्य त्यौहारों में सर्वोत्तम रूप से परिलक्षित होती है जो विभिन्न जातीय समुदायों द्वारा वर्ष के विभिन्न भागों में मनाए जाते हैं। इस प्रकार, जब पूर्वोत्तर संस्कृति की बात आती है, तो यह क्षेत्र एक विस्तृत कैनवॉस प्रस्तुत करता है जिसमें असंख्य त्यौहार, व्यंजनों की एक विस्तृत श्रृंखला और निश्चित रूप से संगीत, हथकरघा और हस्तशिल्प शामिल हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र पृथक मानव जातियों से सम्बद्ध 200 से अधिक विविध जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों का घर है। इस वजह से इस क्षेत्र को अक्सर 'मानव विज्ञानियों का स्वर्ग' के रूप में संदर्भित किया जाता है जबकि इस क्षेत्र में मानवीय पैरों के निशान का पता प्रारंभिक पाषाण युग या पुरापाषाण युग में लगाया गया। नृवंश विज्ञानियों ने मोंगोलोइड्स और आर्यों की प्रमुखता के अलावा जिन अन्य जातियों की पूर्वोत्तर में उपस्थिति की पुष्टि की है, उनमें पूर्व-द्रविड़ियन, यूरेशियन, ऑस्ट्रोलॉइड्स, अल्पाइन या आर्मेनॉइड्स, मेडिटेरेनियन, इंडो आर्य, ईरानी सीथियन और नेग्रिटो भी शामिल हैं। इस क्षेत्र में मौजूद नस्लीय विविधता को देखते हुए यह स्वाभाविक है।

लेखिका गुवाहाटी से सम्बद्ध हैं और इनकी अंग्रेज़ी और असमिया में 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
ई-मेल : tapatibkashyap@gmail.com

पूर्वोत्तर विविध जातियों, संस्कृतियों और परम्पराओं का केंद्र और मिलन बिंदु भी है। यह विविधता असंख्य त्यौहारों में सर्वोत्तम रूप से परिलक्षित होती है जो विभिन्न जातीय समुदायों द्वारा वर्ष के विभिन्न भागों में मनाए जाते हैं। इस प्रकार, जब पूर्वोत्तर संस्कृति की बात आती है, तो यह क्षेत्र एक विस्तृत कैनवॉस प्रस्तुत करता है जिसमें असंख्य त्यौहार, व्यंजनों की एक विस्तृत शृंखला और निश्चित रूप से संगीत, हथकरघा और हस्तशिल्प शामिल हैं।

लगभग सभी जातीय समुदाय पुरातन समय से मुख्य रूप से कृषि में लगे हुए हैं। गौर से देखने पर वही सबसे ज़्यादा मिलेगा। पूर्वोत्तर के विभिन्न जातीय स्वदेशी समुदायों के त्यौहार वार्षिक कृषि चक्र से संबंधित हैं, कुछ को बुआई का मौसम चिह्नित करने के लिए आयोजित किया जाता

हार्नबिल उत्सव

को 'त्यौहारों का त्यौहार' के रूप में जाना जाता है। यह उत्सव अंर्तजातीय सद्भावना को बढ़ावा देने और अनूठी नागा विरासत के संरक्षण हेतु मनाया जाता है।

है जबकि अधिकांश अन्य त्यौहारों को फसल कटाई के बाद मनाया जाता है। हालांकि ये जातीय त्यौहार हमेशा से ही लोगों का ध्यान आकर्षित करते रहे हैं, लेकिन हाल के दशक या उससे अधिक समय में ही इन त्यौहारों का आनंद लेने या देखने के उद्देश्य से इस क्षेत्र का दौरा करने अधिक पर्यटक आए हैं।

एक समय था जब इस क्षेत्र में पर्यटकों का आना-जाना ज़्यादातर असम में कामाख्या मंदिर और काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, मेघालय में शिलांग और चेरापूंजी अरुणाचल प्रदेश में तवांग और मणिपुर में लोकटक झील जैसे कुछ स्थानों तक ही सीमित रहा। लेकिन समय बीतने और सुरक्षा परिदृश्य में महत्वपूर्ण सुधार के बाद इस क्षेत्र ने अपनी पर्यटन क्षमता को फिर से परिभाषित करना शुरू कर दिया है और वन्य जीवन तथा प्रकृति के पारम्परिक आकर्षणों से लेकर जातीय संसाधनों तक में पर्यटकों की रुचि बढ़ रही है।

पर्यटन उद्योग के अंदरुनी सूत्रों के अनुसार, कई कारकों ने पारंपरिक गंतव्यों से इस बदलाव में योगदान दिया और जातीय त्यौहारों, व्यंजनों, संगीत और संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा किया। पहला और सबसे महत्वपूर्ण इस क्षेत्र की समग्र स्थिति है, जो विदेश सहित क्षेत्र के बाहर के संभावित पर्यटकों को आमंत्रण का मज़बूत संकेत देती है।

गुवाहाटी स्थित प्रमुख टूर ऑपरेटर दीपक शर्मा बताते हैं कि "एक समय था जब इस क्षेत्र से बहुत सारी नकारात्मक खबरें आ रही थीं। अब स्थिति बदल गई है और नकारात्मक खबरें अब अतीत की बात बन कर रह गई है।

एक बात जो समान रूप से महत्वपूर्ण है, वह यह कि समुदाय की स्वयं पर्यटन को एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में विकसित करने में रुचि बढ़नी ज़रूरी है। सूचनाओं का आदान-प्रदान इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के आगमन से कई गुना बढ़ गया है और विभिन्न समुदायों की अब तक की अनकही कहानियाँ-उनके अद्वितीय त्यौहार, पाक आदतें, संगीत, नृत्य, लोकगीत, हथकरघा और हस्तशिल्प के बारे में जानकारी अब इंटरनेट के ज़रिए आसानी से उपलब्ध है।

जातीय त्यौहार

हालांकि पूर्वोत्तर के प्रत्येक जातीय समुदाय का अपना समूह है तथापि विभिन्न कारणों से पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषताओं और त्यौहारों को बढ़ावा देने में सभी सक्षम नहीं हैं। ऐसे त्यौहार जो पिछले कुछ दशकों में अलग दिखने या बदलाव लाने में सक्षम हैं, निश्चित रूप से उनमें असम का रोंगाली बिहू त्यौहार, मिज़ोस का चपचार कुट त्यौहार, और मेघालय के ज़ीरोस का वांगला या सौ ड्रम उत्सव शामिल हैं।

असम में रोंगाली बिहू- नए साल का त्यौहार- क्षेत्र के सभी जातीय त्यौहारों में अभी भी सबसे बड़ा आकर्षण बना हुआ है। हालांकि संगीत और नृत्य वसंत (मध्य- अप्रैल) में आयोजित होने वाले बिहू के प्रमुख घटक हैं, तथापि यह विभिन्न प्रकार के असमिया रेशम के कपड़े (पाट, गोल्डन मूगा और एंडी) खरीदने का भी सबसे अच्छा मौसम है। पारंपरिक पेठे की कई किस्में- चावल के पाउडर से बने केक खाने के शौकीनों का ध्यान आकर्षित करते हैं। रोंगाली बिहू का आनंद गुवाहाटी, ज़ोरहाट, डिब्रूगढ़, शिवसागर और तेजपुर के आसपास के गाँवों में सबसे ज़्यादा लिया जाता है। गुवाहाटी में श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में केंद्रीय रूप से आयोजित रोंगाली बिहू देखने लायक है।

हाल के दशकों में पूर्वोत्तर में एक नया चलन देखने को मिला है। यहाँ पारंपरिक नृत्य, संगीत और व्यंजनों पर केंद्रित पर्यटन उत्सवों का आयोजन किया जाने लगा है। असम में आयोजित होने वाला चंदुबी महोत्सव ऐसा ही एक त्यौहार है, जो जनवरी के पहले सप्ताह में सुरम्य चंदुबी झील के किनारे, 50 किमी. गुवाहाटी के पश्चिम में आयोजित किया जाता है। यह विशेष रूप से राभा जनजाति के संगीत, नृत्य और व्यंजनों को प्रदर्शित करता है, जिसका फरकांति नृत्य सबसे रंगारंग नृत्य है। जगीरोड पर, गुवाहाटी से लगभग 45 किमी. पूर्व में पारंपरिक जॉन-बील मेला आयोजित किया जाता है। मेघालय की पहाड़ियों के खासी और असम के मैदानी इलाकों के तिवस के बीच वस्तु-विनिमय उत्सव के रूप में समय से आयोजित किया जाने वाला यह त्यौहार पिछले दो दशकों में एक पर्यटक आकर्षण के रूप में उभरा है। जबकि आदिवासी समुदाय अपने बीच

पारंपरिक भोजन और कपड़ों का आदान-प्रदान करते हैं; अन्य आगंतुक उन्हें खरीद सकते हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह असम का कार्बी समुदाय था जिसने सबसे पहले अपनी संस्कृति- नृत्य, संगीत और भोजन- की संभावित पर्यटन गतिविधि के रूप में पहचान की थी और ठीक पचास साल पहले कार्बी युवा महोत्सव का आयोजन शुरू किया गया। प्रत्येक फरवरी को आयोजित होने वाले इस उत्सव के स्वर्ण जयंती समारोह में भारत के राष्ट्रपति ने इस उत्सव की शोभा बढ़ाई थी। 2000 में नगालैंड में दिसंबर के पहले सप्ताह में एक निश्चित तिथि उत्सव शुरू किया गया जिसमें राज्य की सभी सत्रह प्रमुख जनजातियों को कवर किया गया और इस उत्सव को 'हॉर्नबिल महोत्सव' का नाम दिया गया। पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से निरंतर प्रचार अभियान के बाद हॉर्नबिल महोत्सव आज सैकड़ों विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। विदेशी पर्यटक हर साल दिसंबर के पहले सप्ताह में नगालैंड आते हैं।

युद्ध, सामुदायिक शिकार आदि को दर्शाने वाले रंग-बिरंगे लोकनृत्य, सामुदायिक खेती, पारंपरिक संगीत और भोजन, सभी को कुछ दिनों के उत्सव में यहाँ प्रदर्शित किया जाता है। इस उत्सव में न केवल पर्यटकों को चार या पांच दिनों के अंतराल में 17 अलग-अलग जनजातियों की अद्भुत झलक देखने को मिलती है, बल्कि राज्य और समुदायों को आर्थिक रूप से भी लाभ होता है। उदाहरण के लिए, दिसंबर 2023 में कोहिमा में 2100 से अधिक विदेशी और 37,000 घरेलू पर्यटक शामिल हुए।

शायद इन दो जातीय त्योहारों की पर्यटकों को आकर्षित करने में सफलता के कारण ही हाल के दिनों में अलग-अलग राज्यों में इसी तरह के त्योहार शुरू हो गए हैं। अरुणाचल प्रदेश के पारंपरिक त्योहारों में, जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन गए हैं, फरवरी में आयोजित होने वाला तवांग की मोनपा जनजाति का नववर्ष त्योहार लोसर सबसे रंग-बिरंगा है। आस्था से बौद्ध 'मोनपा' सबसे रंग-बिरंगा मुखौटा नृत्य 'अजी ल्हामू' का प्रदर्शन करते हैं जो फोटोग्राफरों के लिए एक दावत है।

दूसरी ओर, मिज़ोरम में, चपचर कुट- वसंत उत्सव- पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पारंपरिक गाँव के मैदान से बाहर राज्य की राजधानी आइज़ोल में लाया गया जो छोटी पहाड़ी के इस राज्य का सबसे बड़ा उत्सव बन गया है। राज्य में झूम ऑपरेशन (जंगल को जलाकर साफ़ करना) का सबसे कठिन कार्य पूरा होने पर मार्च के मध्य में यह उत्सव गाँवों में मनाया जाता है। आइज़ोल में केंद्रीय रूप से आयोजित चपचर कुट उत्सव हर तरफ से भीड़ को आकर्षित करता है। चेरौ या बांस नृत्य, जो युवक-युवतियों की दर्जनों टोलियों द्वारा खुआंग (ड्रम), दार, दारबू, दारमंग (विभिन्न प्रकार के घंटे) और सेकी (मिथुन हॉर्न) की थाप पर बांस के कई डंडों की ताली के बीच एक ताल में किया जाता है, से पर्यटक विशेष रूप से रोमांचित होते हैं।

अगस्त-सितंबर में मिज़ोरम आने वाले लोग मिम कुट (मक्का उत्सव) का आनंद लेते हैं जबकि दिसंबर में आने वाले लोग पावल कुट (फसल त्योहार) का आनंद ले सकते हैं। इन त्योहारों में चपचर कुट से भोजन भिन्न हो सकता है, लेकिन नृत्य और संगीत एक जैसा होता हैं।

इसी तरह, नगालैंड के कई जातीय त्योहार भी पर्यटकों के बीच, चाहे वे घरेलू पर्यटक हों या विदेशी, लोकप्रिय हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश सेक्रेनी और मोत्सु त्योहार हैं। फरवरी में आयोजित होने वाला सेक्रेनी अंगामी समुदाय का, जो कोहिमा और उसके आसपास रहते हैं, दस दिवसीय उत्सव है जो युद्ध पर जाने से पहले शुद्धिकरण और पवित्रीकरण का प्रतीक है; दूसरी ओर मोत्सु मई के प्रथम सप्ताह में मोकोकचुंग ज़िले में एओ समुदाय द्वारा मनाया जाता है। बुआई के मौसम के बाद मनाया जाने वाला ये त्योहार सामुदायिक बंधन का प्रतीक है। पर्यटक विशेष रूप से पारंपरिक पोशाक, संगीत, संगीत वाद्ययंत्र और नृत्य में रुचि लेते हैं और निश्चित रूप से

पूर्वोत्तर भारत के जीवंत त्योहार और सांस्कृतिक विविधता

- **रंगोली उत्सव, असम** : असम के संगीत नृत्य, शिल्प और जातीय परंपरा को प्रोत्साहन देने के लिए मनाया जाता है।
- **चैरी खिलने का त्योहार, मेघालय** : शरद ऋतु में खिलने वाली चैरी का फूल पर्यटकों को आधुनिक और परंपरागत अनुभव प्रदान करता है।
- **शिरुई लिली उत्सव, मणिपुर** : मणिपुर के राज्य फूल 'लिली' का उत्सव विविध सामुदायिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है।

विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में भी, जो भारत के अन्य भागों में नहीं पाए जाते।

मेघालय में, जहां शिलांग (पूर्व का स्कॉटलैंड) और चेरापूंजी तथा मावसिनराम (पृथ्वी पर दो सबसे आर्द्र स्थान) में हर गुज़रते साल के साथ भीड़ बढ़ती जा रही है; हाल के दिनों में स्थानीय उद्यमियों ने कुछ अन्य पर्यटन उत्पाद लॉन्च किए हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण मावफ्लांग सेक्रेड ग्रोव्स है जिसे वहां के पेड़ों के औषधीय महत्व के कारण स्वदेशी समुदाय पवित्र और दिव्य मानते हैं, लेकिन उनके लिए अत्यधिक महत्व भी रखते हैं क्योंकि यह प्रकृति और मनुष्य के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। जबकि संगीत और नृत्य में रुचि रखने वालों को पारंपरिक नृत्य-जैसे खासी समुदाय के नोंगक्रेम और शाद-सुक-मिन्सिएम, गारो के वांगला या सौ ड्रम त्यौहार और जैन्तिया जनजाति के बहदीनखलाम- बहुत दिलचस्प लगते हैं, बड़ी संख्या में युवा पर्यटक आजकल नवंबर में शिलांग में आयोजित होने वाले चेरी ब्लॉसम फेस्टिवल का भी इंतज़ार करते हैं, जो स्थानीय स्तर पर बने सर्वश्रेष्ठ गिटार और अन्य स्ट्रिंग वाद्ययंत्रों के लिए जाना जाने वाला शहर है।

हर तरफ संगीत

शिलांग को भारत की रॉक राजधानी होने का गौरव भी प्राप्त है जहां न केवल सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले स्थानीय रूप से निर्मित गिटार मिलते हैं बल्कि लू माजॉ जैसे देश के सर्वश्रेष्ठ गिटारवादक भी इसी रॉक राजधानी की देन है। महान गायक भूपेन हज़ारिका द्वारा गाए कई गीतों से अमर हो चुका शिलांग, किसी भी दिन, संगीत का शहर है, जहां सबसे बड़ी भीड़ बॉब डायलन के जन्मदिन के आसपास इस तरह से जश्न मनाती है जैसे कि नोबेल पुरस्कार विजेता मेघालय के थे।

2012 में अरुणाचल प्रदेश की अपातानी घाटी में ज़िरो म्यूजिक फेस्टिवल (Ziro Music Festival) की शुरुआत की गई। दूसरी ओर, ये हिमालयी राज्य हर साल अक्टूबर में तकरीबन एक सप्ताह तक पारंपरिक संगीत का प्रदर्शन करता है; साथ ही, बड़े बैंडों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। इस त्यौहार का मुख्य आकर्षण मोटरबाइकों पर देश भर से कई सौ संगीत प्रेमियों का आगमन है।

ब्रह्मपुत्र के हृदय में स्थित माजुली द्वीप, जोकि विश्व का सबसे बड़ा आबाद नदी द्वीप है, के पास जातीय त्यौहारों, संगीत और व्यंजनों के साथ पर्यटकों को आकर्षित करने के एक से अधिक कारण हैं। मध्यकालीन असम में महान संत-सुधारक द्वारा वैष्णव संस्कृति के उपकेंद्र माजुली की शुरुआत की गई जिसका सबसे बड़ा आकर्षण यहां नवम्बर में आयोजित होने वाला रास महोत्सव रहा है। इस सात दिवसीय कार्यक्रम में 16वीं शताब्दी में लिखे गए पारंपरिक नाटक भाओना का प्रदर्शन शामिल है जिसमें अन्य के साथ सत्रिया नृत्य, एक शास्त्रीय नृत्यशैली शामिल है। अप्रैल में, द्वीप का मिसिंग आदिवासी समुदाय अली-ए-लिरिगंग - अपना वसंत उत्सव मनाता है– यहाँ आए पर्यटक अपने दिलों में ओइनाटोम की अनूठी धुन लेकर लौटते हैं जिन्हें 'प्रेम के गीत' कहा जाता है।

हाल के वर्षों में, माजुली ने अपने आकर्षणों की सूची में संगीत और संस्कृति के नए उत्सव मौन गीत को जोड़ा है, जो जनवरी के मध्य में ब्रह्मपुत्र के तट पर रेतीले मैदान, जो विरासत द्वीप को घेरे हुए हैं, में आयोजित किया गया।

संगीत और संस्कृति का यह त्यौहार वस्तुतः विभिन्न रुचियों वाले पर्यटकों- संगीत से लेकर कविता, कला, शिल्प, भोजन सामग्री, पाक तकनीक और

पूर्वोत्तर भारत के जीवंत त्यौहार और सांस्कृतिक विविधता

- **ज़िरो संगीत उत्सव, अरुणाचल प्रदेश** : मनमोहक संगीत और सांस्कृतिक प्रदर्शन की विशेषता वाला सबसे बड़ा गैर-तीर्थयात्रा कार्यक्रम

- **टेमी टी शरद ऋतु उत्सव, सिक्किम** : एक अनूठा कार्यक्रम जिसमें जाने-माने टेमी टी एस्टेट में जैविक चाय का उत्सव मनाया जाता है।

बैम्बू शूट्स

पूर्वोत्तर क्षेत्र में बड़े पैमाने पर खाया जाने वाला 'बैम्बू शूट्स' अरुणाचल प्रदेश में भोजन का मुख्य घटक है।

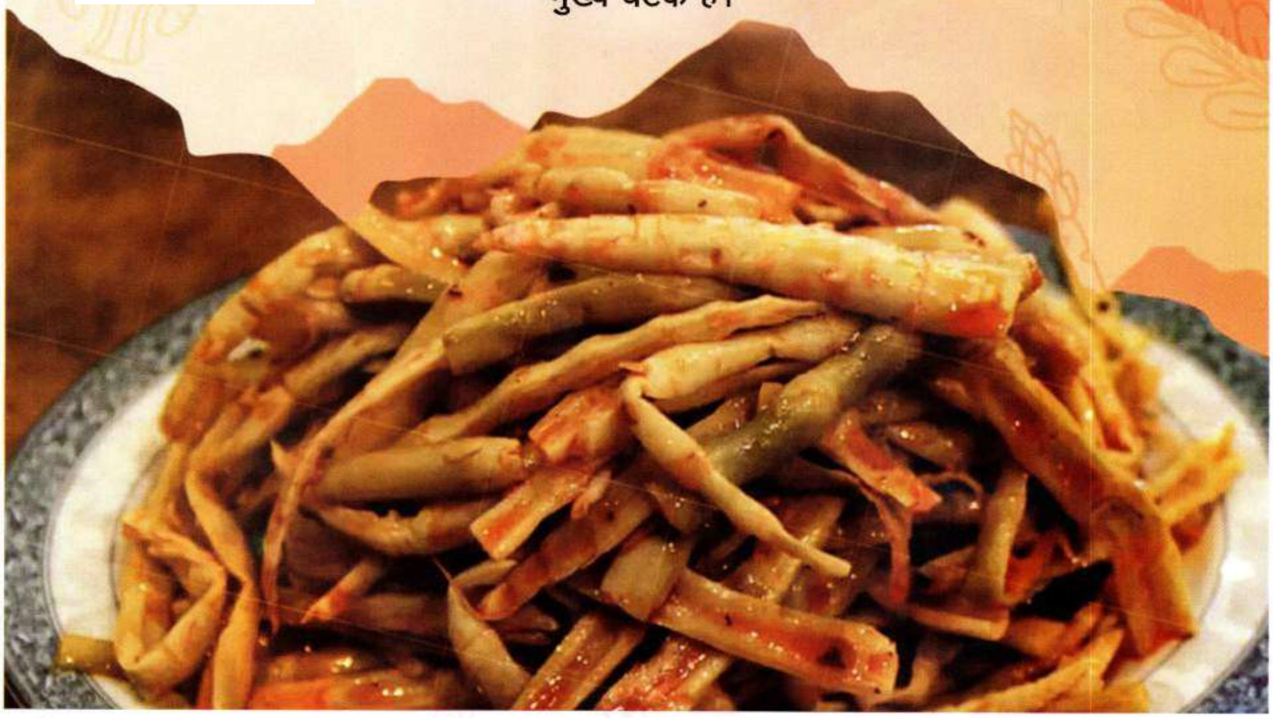

स्वदेशी जड़ी-बूटियाँ के अलावा एक दर्जन या अधिक सत्र-मध्यकालीन वैष्णव मठों की यात्रा के इच्छुक पर्यटकों को आकर्षित करता है।

स्वाद कलिकाओं के लिए

हालाँकि प्रत्येक जातीय समुदाय का अपना अलग भोजन और पाककला परंपरा है, यह केवल करीब पिछले दो दशकों से ही है कि जातीय भोजन पर्यटकों के बीच पसंदीदा बने हैं। नई पीढ़ी के पर्यटन उद्यमियों का कहना है कि आज का पर्यटक सभी प्रकार के जातीय भोजन का स्वाद चखना पसंद करता है। एक समय था जब विदेशी पर्यटक आमतौर पर यूरोपीय भोजन और घरेलू पर्यटक भारतीय भोजन जैसे चावल, डोसा और परांठा की तलाश करते थे। नई पीढ़ी के पर्यटक न केवल मानसिक रूप से जिज्ञासु हैं, बल्कि अपनी स्वाद कलिकाओं को लेकर भी उत्सुक हैं।

पूर्वोत्तर में चूंकि प्रत्येक जिला या प्रत्येक जनजाति अपना विशिष्ट व्यंजन ऑफर करते हैं, पर्यटक तेज़ी से इस क्षेत्र के बारे में, खाद्य उत्सवों की भूमि के रूप में, विचार करने लगे हैं जबकि प्रत्येक राज्य की राजधानी या शहर के ज़िले में एक या कई रेस्तरां जातीय व्यंजन पेश करते हैं, कई आदिवासी गाँवों में भी पर्यटकों को स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं। होम-स्टे सुविधाएं लोकप्रिय बनने के साथ आजकल पर्यटकों को मेज़बान परिवार या मेज़बान समुदाय के साथ भोजन करने का अवसर भी मिलता है, जहां जातीय भोजन नई 'कैचलाइन' है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पर्यटकों की नई पीढ़ी केवल फुर्सत के पर्यटन तक सीमित नहीं है जैसा कि यात्रा आयोजक सरमा ने बताया, घरेलू और विदेशी पर्यटकों के एक बड़े वर्ग के बीच किसी समुदाय की संस्कृति, संगीत, पाक आदतों, परम्परा आदि के बारे में विस्तार से जानने की रुचि बढ़ रही है। पर्यटकों की इस श्रेणी के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वे किसी वन्यजीव अभ्यारण्य या धार्मिक मंदिर की मात्र एक दिवसीय यात्रा के विपरीत समुदाय के साथ रहना पसंद करते हुए अधिक समय व्यतीत करना चाहते हैं। स्थानीय उद्यमियों की युवा पीढ़ी के बीच होमस्टे सुविधा तेज़ी से लोकप्रिय हो रही है। पर्यटक न केवल एक स्थान पर अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं बल्कि किसी विशेष जातीय समुदाय के बारे में और अधिक जानने के लिए दूसरे सीज़न में दोबारा भी आ रहे हैं। ❑

प्राकृतिक पर्यटन के लिए ग्रामीण भारत का सुविधा-संपन्न होना ज़रूरी

-डॉ. वीरेंद्र कुमार पॉल

ग्रामीण पर्यटन के महत्व के बावजूद ग्रामीण समुदायों द्वारा अभी भी इसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। ग्रामीण समुदाय में ग्रामीण पर्यटन को लेकर उद्यमिता की दृष्टि से और पर्यटकों के आगमन की संभावनाओं को लेकर संशय बना हुआ है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ अभी भी हमारे देश में, उन देशों की तुलना में जहां ग्रामीण पर्यटन एक स्थापित विकल्प है, अप्रयुक्त हैं। भारतीय गाँवों में सक्षम सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता को मान्यता नहीं दी गई है, जो पर्यटकों की घटती रुचि का कारण है। एक सक्षम वातावरण बनाने की प्रक्रिया को, जिसे अब तक 'सुविधाकरण' के रूप में संदर्भित किया जाता है, मात्र नीतिगत हस्क्षेप न होकर एक बहुहितधारक जुड़ाव है।

भारत में पर्यटन की वास्तविक संभावना ग्रामीण क्षेत्रों में निहित है। ग्रामीण की अवधारणा खुले क्षेत्रों, छोटी-छोटी बस्तियों, खेतों, प्रकृति की प्रचुरता और लोक संस्कृति से जोड़ती है और यहीं भारत में पर्यटन की संभावनाएं मौजूद हैं। इसके विपरीत दृष्टिकोण भारतीय पर्यटन के संदर्भ में सही नहीं बैठेगा। शिमला कौन जाना चाहेगा अगर प्रकृति के बीच स्थित छोटे पारंपरिक घरों और मंदिरों से युक्त पगडंडियों और खुले परिदृश्य को यात्रा कार्यक्रम से हटा दिया जाए? यदि चेरापूंजी का हर दृश्यबिंदु धुंधला जाए और शहरीकरण की इमारतों के बीच अनोखे पैटर्न के बादलों से भरे विशाल रंगीन आकाश की दृश्यावली कहीं ओझल हो जाए तो फिर कौन 'पूर्व के स्कॉटलैंड' से नाम से प्रचलित मेघालय जाना चाहेगा चूंकि मेघालय विशाल पहाड़ियों की शृंखला के बीच बादलों की हलचल के लिए जाना जाता है। फिर, भारत में पर्यटन की संभावनाओं को शहरीकृत करने पर विचार भी क्यों किया जाए जहाँ प्रकृति के अनुभवों की

लेखक स्कूल ऑफ़ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में प्रोफेसर हैं। ई-मेल : vk.paul@spa.ac.in

करदांग गाँव, लाहौल घाटी, हिमाचल प्रदेश

विविधता और समृद्धि के अन्वेषण की अनगिनत संभावनाएं मौजूद हैं। अगर गाँवों में शहरीकरण का अनुकरण कर उन्हें वास्तविक प्रकृति के अनुभव से वंचित कर दिया जाए तो ऐसा क्लोन किया गया भारत निश्चित रूप से पर्यटकों का पसंदीदा पर्यटन स्थल नहीं हो सकता।

कृत्रिम हस्तक्षेप से बनाए गए फव्वारे, डिस्को लाइट्स आदि का प्रकृति के बीच सैर जैसी सरल चीज़ से कोई मुकाबला नहीं हो सकता। ग्रामीण भारत प्रकृति का संरक्षक है और शहरीकरण का प्रसार उन्हीं संरक्षकों से प्रकृति को लूटना है। ग्रामीण भारत में पर्यटन आर्थिक वरदान है जिसे अभी भी विकसित किया जाना है। इस संदर्भ में अद्वितीय भारतीय पर्यटन को जीवन और जीने का अनुभव देने की संभावनाओं को खोलने की कुंजी की वैश्विक अपील के लिए प्रकृति की प्राचीन सुंदरता और 'सुविधाकरण' की आवश्यकता है आइए, इस परिकल्पना का आगे अन्वेषण करें।

ग्रामीण भारत के पास न केवल घरेलू और शहरी, बल्कि विदेशी पर्यटकों को ऑफर करने के लिए भी अनूठा अनुभव है। भारत में होम स्टे की अवधारणा काफी समय से मौजूद है लेकिन इसके बावजूद, यह अभी भी उस तरीके से नहीं बढ़ पाया है जिससे विस्तार की संभावना बन सके। इसका एक कारण होम स्टे की व्यापक पैकेजिंग की अवधारणा की कमी हो सकती है। उदाहरण के लिए, मूल्यवान पर्यटकों को एक संपूर्ण अनुभव देने के लिए कौशल सेट का स्पष्ट अभाव है। चाहे वह आवास के रखरखाव में उचित व्यावसायिकता का मुद्दा हो या स्वच्छता संबंधी बुनियादी ढाँचा, सेवा की गुणवत्ता, या विश्वसनीय मदद जैसे स्थानीय परिवहन; इसके लिए एक आकर्षक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों की जटिलताओं और लैंगिक भूमिकाओं पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। गाँव आधारित पर्यटन की ऐसी योजनाओं में भाग लेने के लिए सामुदायिक सहभागिता ज़रूरी है। यहाँ इस तथ्य को रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि यहाँ अधिकांश होम स्टे उद्यमी निम्न और मध्यम आय वर्ग से है, जिन्हें विशेष रूप से रणनीतिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है और एक सतत सूक्ष्म उद्यमिता पर्यटन व्यवसाय मॉडल प्रदान करने के लिए उनका मार्गदर्शन और मदद ज़रूरी है।

ग्रामीण पर्यटन

विश्व पर्यटन संगठन (यूएन टूरिज्म) के अनुसार ग्रामीण पर्यटन की विशेषताएं इस प्रकार हैं-

कम जनसंख्या घनत्व, भूदृश्य और भूमि उपयोग पर कृषि एवं वानिकी का प्रभुत्व और पारंपरिक सामाजिक संरचना तथा जीवनशैली। भारतीय संदर्भ में, ग्रामीण पर्यटन आकांक्षी ग्रामीण इलाकों में सतत विकास लाता है। साथ ही, भावी पीढ़ी के लिए सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करता है। शहरों में सीमित क्षमता में

उपलब्ध मूल बुनियादी ढांचे और नौकरी के घटते अवसरों के चलते शहरी प्रवासन से उन पर भारी दबाव पड़ रहा है। वहीं ग्रामीण पर्यटन उद्यमिता आधारित रोज़गार के द्वार खोलता है और इसलिए शहरी प्रवासन को रोकने के लिए प्रमुख चालक है।

यह निश्चित रूप से लीक से हटकर सोच नहीं है। उदाहरण के लिए, भूटान में समुदाय-आधारित पर्यटन सतत पर्यटन की एक बेहतर तरीके से तैयार की गई रणनीति है जिसमें ग्राम पर्यटन भूटानी जीवनशैली का अनुभव प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, यह ग्राम समुदायों को आर्थिक और आजीविका लाभ पहुँचाता है। यह रणनीति स्थानीय बिक्री को कवर करती है। गाँव के लोगों द्वारा सीधे कृषि उत्पाद उपलब्ध कराने से उन्हें अतिरिक्त वित्तीय लाभ मिलता है। नीतिगत हस्तक्षेप के रूप में ग्रामीणों को आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे ग्राम समुदायों को व्यावसायिक बढ़त मिल सके।

नवोन्मेषी पर्यटन उद्यमी, उदाहरण के लिए, फार्म टूरिज्म के साथ प्रयोग कर रहे हैं जहां लोग वास्तव में खेतों में काम करते हैं और कृषि का अनुभव करते हैं। यह रोमांचक अनुभव होता है जब ऐसे ऑफ बीट पर्यटक अपने भोजन के लिए कच्चा माल और सब्जियाँ खेत से प्राप्त करते हैं और यहां तक कि पारंपरिक रसोईघर के माहौल में पारंपरिक व्यंजन भी स्वयं पकाते हैं। कन्फेक्शनरी से खरीदे गए डेयरी उत्पाद एक ऐसी सुविधा है जो हर कोई चाहेगा, लेकिन मवेशियों से दूध निकालने से लेकर कच्चे प्रसंस्करण तक इसका उत्पादन कैसे किया जाता है। इसका अनुभव करना युवा पीढ़ी के लिए वास्तव में एक बेहतरीन अवसर है। लक्ज़री कारों

ग्रामीण पर्यटन
अद्वितीय संस्कृति का प्रदर्शन

से दूर, गाँवों में नेचर वॉक एक अप्रयुक्त पर्यटन क्षमता है जहाँ वास्तविक ग्रामीण जीवन को मवेशियों के स्पर्श और अनुभव के साथ महसूस किया जाता है और मिट्टी की गंध को कृत्रिम रूप से दबाया नहीं जाता। गाँवों में डेयरी की शुद्धता का अनुभव होता है, जिसका हर कोई घरों की विलासिता में आनंद लेता है।

एक अन्य नवाचार में 'स्वयंसेवी पर्यटन' भी ग्रामीण पर्यटन का एक महत्वपूर्ण रूप है जिसमें पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करते हैं और गाँव में अपने प्रवास का आनंद लेते हुए बच्चों को पढ़ाने, कलाकृतियाँ बनाने या ज्ञान में मूल्य जोड़ने जैसे बेहतर कृषि के संदर्भ में अपना योगदान देते हैं। बदले में उन्हें जीवन बदल देने वाला सामाजिक जुड़ाव भी मिलता है। सामाजिक सेवा के इच्छुक लोगों के लिए समाज सेवा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। वे समाज के लिए अपना योगदान देना चाहते हैं और वे कॅरियर में भौतिक उपलब्धियों से अब और प्रेरित नहीं होते हैं। ऐसे उत्साही लोग स्वयंसेवी पर्यटन के माध्यम से अपना गुणवत्तापूर्ण समय समर्पित करने के इच्छुक होते हैं और गाँवों की समस्याओं के लिए रचनात्मक समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए रामबाण

ग्रामीण पर्यटन शायद प्रकृति में रची-बसी जीवनशैली की सततता के अनुभवात्मक प्रचार का सबसे अच्छा तरीका है। यह अब एक सर्वमान्य तथ्य है कि विकास को बनाए रखने के लिए जीवनशैली में बदलाव सबसे महत्वपूर्ण पहलू है बशर्ते संसाधनों पर भावी पीढ़ियों के अधिकारों का उल्लंघन न हो। साथ ही, यह इस दृढ़ विश्वास की पुष्टि करता है कि ग्रामीण आबादी के मन को अनावश्यक शहरी चीज़ों को अपनाने से बचना चाहिए। पारंपरिक LiFE (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) सिद्धांतों में गर्व की

जीवनचर्या जो हर किसी को अपनानी चाहिए-

- पुराने वस्त्र और किताब दान करें।
- पालतू जानवरों को सार्वजनिक स्थलों पर मूत्र त्याग न कराएं
- अपशिष्ट को जल निकायों या सार्वजनिक जगहों पर न फेंके
- प्राकृतिक या जैविक खेती अपनाएं
- प्रदूषण के प्रभाव को कम करने के लिए पेड़-पौधे लगाएं
- रिचार्ज़ेबल लिथियम सेल का उपयोग करें

भावना पैदा करना दृढ़ विश्वास और शाश्वतता सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा माध्यम है।

दुबई में आयोजित कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टीज के 28वें सम्मेलन में हिमालय पर्वत श्रृंखला की कमजोर पारिस्थितिकी प्रणालियों में जलवायु परिवर्तन पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई गई। अब इस बात पर विचार किया जा रहा है कि यदि वर्तमान शहरीकरण और अन्य विकास पद्धतियाँ इसी तरह निरंतर जारी रही तो 2100 तक हिमालय का 75% भाग अपना हिम आवरण खो देगा। भारत में हिमालय क्षेत्र के कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम के गाँवों में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 12.56% है। हालाँकि जलवायु संकट-आधारित विकास प्रतिमान के संदर्भ में, यह भौगोलिक क्षेत्र केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण पर्यटन को नेशनल मिशन फॉर सस्टेनिंग द हिमालयन इकोसिस्टम (NMSHE) नीति के साथ एकीकृत करना आवश्यक है। भारत द्वारा सीओपी 28 में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' प्रस्तुत किया गया। 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' का उद्देश्य वृक्षारोपण, जल संचयन और ऐसी अन्य प्रथाओं को बढ़ावा देकर वित्तीय लाभांश लाना है। क्या ग्रामीण पर्यटन और समृद्ध प्राकृतिक ग्रामीण संसाधनों से 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' के माध्यम से अत्यंत आवश्यक वित्तीय सशक्तीकरण हासिल कर जरूरी सुविधाओं हेतु आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान नहीं की जा सकती? यह ग्रामीण पर्यटन के सबसे प्रभावशाली अवसर का लाभ उठाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप के रचनात्मक विस्तार का मामला है।

भारत लम्बे समय तक निम्न कार्बन विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है और 2070 तक नेट-शून्य तक पहुँचने का लक्ष्य रखा गया है। सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिकीय विचार के अनुरूप वन और वनस्पति आवरण को बढ़ाना निम्न कार्बन विकास रणनीतियों में शामिल है।

सुविधाकरण

ग्रामीण पर्यटन के महत्व के बावजूद ग्रामीण समुदायों द्वारा अभी भी इसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। ग्रामीण समुदाय में ग्रामीण पर्यटन को लेकर उद्यमिता की दृष्टि से और पर्यटकों के आगमन की संभावनाओं को लेकर संशय बना हुआ है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ अभी भी हमारे देश में, उन देशों की तुलना में जहां ग्रामीण पर्यटन एक स्थापित विकल्प है, अप्रयुक्त हैं। भारतीय गाँवों में सक्षम सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता को मान्यता नहीं दी गई है, जो पर्यटकों की घटती रुचि का कारण है। एक सक्षम वातावरण बनाने की प्रक्रिया को, जिसे अब तक 'सुविधाकरण' के रूप में संदर्भित किया जाता है, मात्र नीतिगत हस्क्षेप न होकर एक बहुहितधारक जुड़ाव है। 'सुविधा' जो मूर्त और सूचनात्मक पहुँच दोनों हो सकती है को तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया है जिनका विवरण आगे दिया जा रहा है।

सकारात्मक सुविधाएं

सबसे महत्वपूर्ण इन सकारात्मक सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण पर्यटन में रुचि पैदा करने का विचार ही विफल हो जाएगा। सकारात्मक सुविधाओं में शामिल हैं:

- **स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच** : गाँव मुख्य शहर से काफी दूर होते हैं, इसलिए वहां स्वास्थ्य देखभाल तक विश्वसनीय पहुँच होनी बहुत जरूरी है; विशेष रूप से आपातकालीन सहायता उचित समय के भीतर मिलनी अत्यावश्यक है। वृद्ध आबादी किसी भी मामले में असुरक्षित हो सकती है, युवा 'साहसिक उत्साही' आबादी को भी किसी अप्रिय घटना के समय आपातकालीन सहायता की आवश्यकता हो सकती है।
- **स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन** : स्वच्छता और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन का अभाव एक प्रमुख अवरोधक है। इससे भयावह स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। एक छोटी-सी में ग्राम स्तर की सेटिंग में इस चुनौती से पार पाना काफी आसान है।
- **सुरक्षित पीने योग्य पानी तक पहुँच** : सुरक्षित पीने योग्य पानी का आश्वासन यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि आगंतुक बीमार न पड़ें।
- **हरित ऊर्जा** : विश्वसनीय बिजली होने के अलावा,

यह महत्वपूर्ण है कि शोर मचने वाले जेनेरेटरों का सहारा न लिया जाए। सौर पैनलों का उपयोग कर हरित ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता पर्यावरण जागरूकता की एक बेहतरीन मिसाल है।

- **स्ट्रीट लाइटिंग** : यह उन लोगों की सुरक्षा के लिए सबसे आवश्यक है जो परिवेश से परिचित नहीं हैं। किसी भी तरह सूर्यास्त के बाद कमरे में ही सीमित रहना एक बेहतर विचार नहीं हो सकता।
- **स्मार्ट सुरक्षा समाधान** : सुरक्षा आवश्यकताओं के लिए स्मार्ट समाधानों के माध्यम से बाहरी रिमोट सहायता से जुड़ाव आवश्यक प्रवर्तक है।

सहायक सुविधाएं

पर्यटक-अनुकूल वातावरण बनाने के लिए बुनियादी सहायक सुविधाएं आवश्यक होंगी, जिसमें शामिल होगा

- **डिजिटल सेवाएं** : मोबाइल कनेक्टिविटी से परे, डिजिटल सेवाओं तक पहुँच एक जुड़े रहने की सुविधा है जिसकी अन्यथा कॅरियर के प्रति संवेदनशील आबादी के लिए व्यवधान की आशंका हो सकती है।
- **यात्रा कनेक्टिविटी** : दूरस्थ स्थान को प्राथमिकता देना एक आकर्षक विकल्प है यदि यात्रा कनेक्टिविटी उपलब्ध हो।
- **प्रतिबंधात्मक प्रथाओं का स्पष्टीकरण** : पर्यटकों को स्थानीय समुदायों की संवेदनशीलता के बारे में जागरूक कर पर्यटकों के साथ अनुकूलता बढ़ाई जा सकती है। प्रतिबंधात्मक प्रथाओं को सामने लाना एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है। ऐसी सामान्य प्रतिबंधात्मक प्रथाओं में पहनावा, लिंग संबंधी मुद्दे, भोजन, मादक पेय, धार्मिक भावनाएं, व्यवहार संबंधी रीति-रिवाज़, कुछ भाषाई शब्दजाल का प्रयोग आदि शामिल हैं।
- **सुविधाओं तक पहुँच** : बुनियादी कन्फेक्शनरी, किराना, पैकेज्ड भोजन, बेकरी और बैंक एटीएम में सामान आपूर्ति को जमा करने के बोझ से काफी राहत मिली है।

मूल्यवर्धन सुविधाएं

मूल्यवर्धन सुविधाएं प्रदान करना आवश्यक है जो इसके प्रभाव को यादगार बनाएंगी और लोक संस्कृति का एक उन्नत अनुभव देंगी जो कि ग्रामीण पर्यटन का अद्वितीय विक्रय प्रस्ताव (यूएसपी) है। इनमें शामिल होंगे:

- **डिजिटल कौशल सेट** : पर्यटक और गाँव के मेज़बान के बीच इंटरफेस डिजिटल प्रौद्योगिकी के ज़रिए होता है जिसके लिए गाँवों में डिजिटल साक्षरता बढ़ाना ज़रूरी है ग्रामीण समुदायों की सोशल मीडिया संलग्नताएं, होम-स्टे और घर-आधारित स्थानीय उपज की ई-मार्केटिंग आदि को सँभालने के लिए गाँवों में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **आतिथ्य कौशल सेट** : मेज़बान समुदायों को अतिथियों के साथ पेशेवर व्यवहार सीखने के लिए आतिथ्य कौशल में प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता है। 'हुनर से रोज़गार तक' और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) पहल जैसी योजनाओं के माध्यम से क्षमता निर्माण हेतु कई कौशल गतिविधियां सीखी जा सकती हैं। भारत सरकार ने पर्यटन मंत्रालय के तत्त्वाधान में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए, राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप के तहत विशेष रूप से 150 घंटे का होम स्टे पाठ्यक्रम तैयार किया है जो कौशल अंतर को दूर करने की पहल का हिस्सा है। ये पाठ्यक्रम होम स्टे मालिकों में उद्यमिता कौशल विकास की एक प्रमुख पहल है।
- **'ग्राम कुटीर उद्यम'** : स्थानीय कला, शिल्प, व्यंजन, अचार, कल्याण कार्यक्रम और ट्रैकिंग जैसी बाहरी गतिविधियों की सुविधाएं घर-आधारित मूल्यवर्धित उद्यम हैं, ऐसे उद्यम जो न केवल पर्यटकों को बेहतर यादगार अनुभव देते हैं बल्कि ग्रामीण समुदाय को भी बिना किसी ऊपर के खर्च के अतिरिक्त आमदनी का ज़रिया बनते हैं।
- **स्थानीय समुदाय से जुड़ना** : स्वयंसेवी पर्यटकों को लक्षित कर संगठित स्थानीय सामुदायिक समूहों से जुड़ना काफी प्रेरक हैं। इससे संस्कृतियों और जीवनशैलियों का अनोखा अनुभव प्रदान करने में मदद मिलती है जिसमें पारिवारिक और सामाजिक गतिविधियों में मेहमान भी शामिल हो सकते हैं। एक कदम और आगे बढ़ाते हुए ग्राम उत्सव कैलेंडर एक मूल्यवर्द्धक यूएसपी हो सकता है।

संक्षेप में, ग्रामीण पर्यटन के ज़रिए गाँवों में परिवर्तन लाने की विशाल क्षमता है। भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन से सम्बद्ध विभिन्न योजनाओं का अभिसरण कर इस दिशा में कुछ ठोस प्रयास किए हैं। अब समय है जब ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से गाँवों के विकास हेतु अन्य हितधारकों को भी अपने प्रयासों में तालमेल बिठाने और सतत योगदान देने के लिए आगे आना होगा। ❑

डाक विरासत

डाक विरासत को पर्यटक आकर्षणों में बदलना

-राशि शर्मा

44 विरासत इमारतों और 1939 से पहले की 350 से अधिक इमारतों के साथ, डाक विभाग एक बड़ी विरासत संपत्ति का प्रबंधन करता है। प्रत्येक विरासत भवन का एक समृद्ध इतिहास है और इसे एक पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है ताकि नागरिक और विदेशी न केवल उनकी सुंदरता की सराहना कर सकें बल्कि इन संरचनाओं से जुड़े अतीत के बारे में भी जान सकें।

8-10 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के साथ, भारत एशिया प्रशांत क्षेत्र में आठवें स्थान पर है। दूसरी ओर, घरेलू पर्यटकों की संख्या प्रति वर्ष 600-700 मिलियन है। जबकि गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और उत्तर प्रदेश में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक है, वहीं घरेलू पर्यटक उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात को पसंद करते हैं। जहां तक भारत आने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के स्रोत देशों का संबंध है, 80% से अधिक पर्यटक बांग्लादेश, यूरोपीय संघ, अमेरिका और ब्रिटेन से हैं। भारत बांग्लादेश और ब्रिटेन के साथ एक इतिहास साझा करता है जिसका अर्थ है कि हर साल भारत आने वाले लगभग 3.5 मिलियन पर्यटक निश्चित रूप से औपनिवेशिक काल के ऐतिहासिक स्थानों को देखने में रुचि रखते होंगे। चूंकि ब्रिटिश भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-पूर्व एशिया के एक बड़े हिस्से, श्रीलंका आदि का शासक था, इसलिए समान रूप से डिज़ाइन की गई इमारतों और संस्थानों के रूप में विरासत लिंक का इन देशों के पर्यटकों को आकर्षित करना स्वाभाविक है। औपनिवेशिक काल की विरासत का प्रतिनिधित्व प्रमुख रूप से उन इमारतों द्वारा किया जाता है जिनका निर्माण औपनिवेशिक शासन के दौरान किया गया था और साथ ही वे संस्थाएं जो अंग्रेजों द्वारा बनाई या विस्तारित की गई थीं। रेलवे और डाक दो प्रमुख संस्थाएं हैं जिन्हें अंग्रेजों ने हमारे विशाल देश के प्रशासन के लिए बनाया था।

भारत का डाक इतिहास दुनिया के सबसे पुराने डाक इतिहास में से एक है, जोकि मौर्यकाल से शुरू होता है। हालांकि, आधुनिक व्यवस्थित डाक पद्धति की नींव 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा रखी गई थी। चूंकि 19वीं और 20वीं शताब्दी में डाक और बाद में टेलीग्राफ संचार का एकमात्र साधन थे; डाकघर, डाक बंगले, मेल ट्रेनें, टिकटें, पत्र आदि हमारे इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए। कम ही लोग जानते होंगे कि पुराने फोर्ट विलियम का गार्ड रूम, जहां 1756 में ब्लैक होल त्रासदी हुई थी, वह कोलकाता जीपीओ के ठीक पीछे एक गली में स्थित है। 1913 में निर्मित मुंबई जीपीओ इंडो-सारसेनिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और बीजापुर के

लेखिका डाक विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार में उपमहानिदेशक (संस्थापन) हैं। ई-मेल : rashi.edu@nic.in

गोल गुंबज से प्रेरित है। बॉम्बे जीपीओ में 3 बेसमेंट हैं जो 3 भूमिगत सुरंगों के माध्यम से बॉम्बे डॉक्स, मिंट से जुड़े हुए हैं, ताकि किसी हमले की स्थिति में इनका इस्तेमाल किया जा सके। प्रसिद्ध बॉम्बे डक मछली का नाम बॉम्बे डॉक मेल ट्रेन से लिया गया है जो औपनिवेशिक काल के दौरान इस मछली को बॉम्बे से कोलकाता तक पहुँचाती थी। प्रसिद्ध डाक बंगले, जिनका उल्लेख कई उपन्यासों, कहानियों, फिल्मों और नाटकों में मिलता है, दौरे पर आने वाले मेल धावकों और सरकारी अधिकारियों के लिए विश्राम स्थल के रूप में बनाए गए थे; ब्रिटिश भारत में बहुत लंबे समय तक इनका प्रबंधन डाक विभाग द्वारा किया जाता रहा।

44 विरासत इमारतों और 1939 से पहले की 350 से अधिक इमारतों के साथ, डाक विभाग एक बड़ी विरासत संपत्ति का प्रबंधन करता है। प्रत्येक विरासत भवन का एक समृद्ध इतिहास है और इसे एक पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है ताकि नागरिक और विदेशी न केवल उनकी सुंदरता की सराहना कर सकें बल्कि इन संरचनाओं से जुड़े अतीत के बारे में भी जान सकें। डाक विभाग इन कई महत्वपूर्ण विरासत इमारतों को पुनर्स्थापित करने के लिए इनटेक (INTACH) और सीपीडब्ल्यूडी के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि ऐसे स्थानों को पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनाया जा सके।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1854 से पहले, डाकघर द्वारा विभिन्न प्रांतों में विविध सेवा दी जाती थी, प्रत्येक के अलग-अलग नियम और डाक शुल्क की अलग-अलग दरें थीं। महत्वपूर्ण कस्बों के बीच मुख्य लाइनों पर बहुत कम नियमित मेल भेजे जाते थे, और जिलों के कलेक्टर अपने स्वयं के स्थानीय डाकघरों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार थे। 1850 में डाक सेवाओं की स्थिति पर विचार करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया गया था, और इसके विचार-विमर्श का परिणाम 1854 का डाकघर अधिनियम था और डाकघर को महानिदेशक नामक एक ही प्रमुख के तहत एक शाही विभाग में परिवर्तित किया गया था। डाकघर भवन का निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण था और इसलिए कलकत्ता में जनरल पोस्ट ऑफिस का निर्माण 1868 में श्री ग्रानविले द्वारा बनाए गए डिज़ाइनों से किया गया था। बाद में, बॉम्बे जनरल पोस्ट ऑफिस का निर्माण 1910 में श्री जेम्स बेग द्वारा किया गया। इमारत शायद ही इतनी बड़ी थी कि इसमें होने वाले भारी काम को निपटाया जा सके हालांकि पोस्टमास्टर जनरल के कार्यालय और सॉर्टिंग शाखा को हटाने से भीड़भाड़ से कुछ हद तक राहत मिली, लेकिन पहले से ही आवास बढ़ाने की मांग थी। मद्रास में भी ऐसा ही हुआ, जहां समुद्र के सामने एक बड़ा डाक और टेलीग्राफ कार्यालय था, जिसे श्री चिशोल्म ने डिज़ाइन किया था और 1885 में जनता के लिए खोल दिया था। व्यापार के विस्तार से इन इमारतों की क्षमता कम पड़ गई थी। अधिकांश मुख्य कार्यालय और महत्वपूर्ण उप कार्यालय व्यवसाय करने की इच्छा रखने वाली जनता के लिए एक उचित हॉल प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए थे, जिसमें क्लर्कों के लिए एक काउंटर

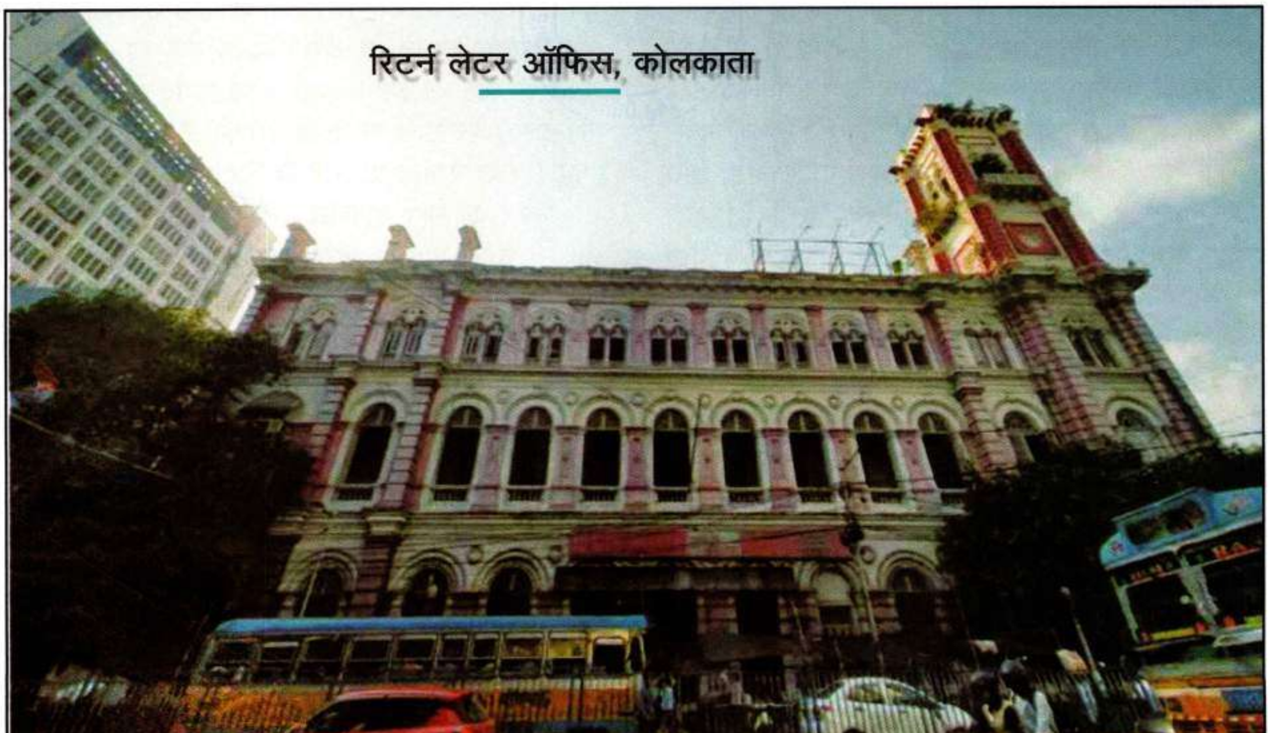
रिटर्न लेटर ऑफिस, कोलकाता

पीएमजी ऑफिस बिल्डिंग, तिरुवनंतपुरम

और भवन में पर्याप्त खुली जगह थी ताकि प्रत्येक शाखा को एक ज़िम्मेदार अधिकारी के पर्यवेक्षण में स्वतंत्र रूप से और आराम से काम करने की अनुमति मिल सके। पहले नागपुर, पटना, चटगाँव, बरेली, कानपुर, कलकत्ता, पुणे, आगरा, इलाहाबाद, वाराणसी, माउंट रोड मद्रास में और इसके बाद दिल्ली, दार्जिलिंग, अजमेर, अहमदाबाद और कई अन्य बड़े शहरों में सुंदर डाकघर भवनों का निर्माण किया गया।

कोलकाता जीपीओ को 1864 में वाल्टर बी. ग्रेनविले द्वारा डिज़ाइन किया गया था, जिन्होंने 1863 से 1868 तक भारत सरकार के सलाहकार वास्तुकार के रूप में काम किया था। भवन का निर्माण मैकिन्टोश बर्न लिमिटेड द्वारा किया गया और 1868 में पूरा हुआ था। इसे एक डाकघर के रूप में काम करने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बनाया गया था। और इसे पहले फोर्ट विलियम की साइट पर बनाया गया था।

कोलकाता के डलहौजी चौराहे पर स्थित आरएलओ भवन भारत का पहला और सबसे बड़ा रिटर्न लेटर कार्यालय था, जिसे पहले 'डेड लेटर ऑफिस' के नाम से जाना जाता था। यह इमारत 1876 में बनकर तैयार हुई थी जब लॉर्ड लिटन ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल थे। इसमें 120 फीट ऊंचा घंटाघर है। यांगून जीपीओ, जो कुछ साल पहले बनाया गया था और मेलबर्न का मेल एक्सचेंज, जो कुछ साल बाद बनाया गया था, वास्तुशिल्प रूप से इस इमारत के समान है।

दिल्ली जीपीओ दिल्ली का पहला डाकघर था। इसका निर्माण 1885 में ऐतिहासिक दीवार शहर शाहजानाबाद में किया गया था। यह ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित दिल्ली का सबसे बड़ा डाकघर था। यह इमारत औपनिवेशिक वास्तुकला शैली के प्रतिष्ठित सजावटी तत्वों को प्रदर्शित करती है। जिस मैगजीन को 1857 में दिल्ली की घेराबंदी के दौरान ब्रिटिश सैनिकों ने उड़ा दिया था, वह कश्मीरी गेट में दिल्ली जीपीओ के ठीक सामने स्थित है।

नई दिल्ली जीपीओ का निर्माण 1934 में 'गोल डाकखाना' नामक उप-डाकघर के रूप में किया गया था। इस इमारत का डिज़ाइन उस समय पीडब्ल्यूडी के मुख्य वास्तुकार रॉबर्ट टोर रसेल द्वारा किया गया था। रायसीना गाँव के निकट स्थित इस स्थान पर पहले वायसराय कैंप पोस्ट ऑफिस की इमारत थी।

पीएमजी कार्यालय, गोवा को 1914 में डाक के संभागीय मुख्यालय के रूप में बनाया गया था और अब यह पीएमजी कार्यालय के रूप में कार्य करता है। यह इमारत लार्गो डी एस्टानको स्कवेयर पर प्रधान डाकघर के सामने स्थित है, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वाणिज्यिक स्कवेयर था। वास्तुकला की शैली में सदियों से विकसित मज़बूत पुर्तगाली और मूल गोवा प्रभाव परिलक्षित है।

पंजिम प्रधान डाकघर भवन की वर्तमान संरचना 1893 में पुर्तगाली पोस्ट के रूप में 1888 तक एक पुलिस स्टेशन के उत्तराधिकार में एक तंबाकू डिपो के पदचिह्न पर बनाई गई थी। लार्गो डी एस्टानको के सामने स्थित ये भवन, जो 18वीं-19वीं शताब्दी के दौरान एक प्रमुख वाणिज्यिक चौराहा था, यह अपने समय के दौरान इमारत के महत्व को दर्शाता है।

लश्कर, पोस्ट ऑफिस, महाराज बाड़ा, ग्वालियर

जनरल पोस्ट ऑफिस, महाराष्ट्र

शिमला में चौड़ा मैदान डाकघर 1910 में निर्मित एक सुंदर इमारत है। इसकी वास्तुकला जीपीओ की तरह दिखती है, जिसमें हिमालय की पारंपरिक काठ-कुणी निर्माण शैली का उपयोग करते हुए गोल पत्थरों और कंकड़-पत्थर वाली दीवारों के साथ नियो-ट्यूडर तत्व शामिल हैं।

बेंगलुरू में डाक संग्रहालय भवन 1804 का है। एक समय इसमें सरकारी संग्रहालय हुआ करता था। बाद में इसे डाक सेवाओं द्वारा एक प्रशासनिक कार्यालय के रूप में उपयोग किया जाने लगा। इसे 2019 में डाक संग्रहालय में बदल दिया गया।

1900 में निर्मित फोर्ट कोच्चि डाकघर एक ऐतिहासिक संरचना है और फोर्ट कोच्चि के लोगों के जीवन में विशेष महत्व रखता है। यह शहर के सबसे व्यस्त स्थानों में से एक था, विशेषकर उन दिनों में जब डाक यूरोप से जहाजों के माध्यम से यहां आती थी।

पीएमजी कार्यालय भवन, तिरुवनंतपुरम कभी त्रावणकोर के मुख्य अभियंता का कार्यालय था। 1933-34 में, भारत सरकार के वायु प्रशिक्षण परिसर की स्थापना यहीं हुई थी। बाद में 1939 में श्री चित्रा थिरुनल ने इस भवन में इंजीनियरिंग कॉलेज शुरू किया। 1961 में कॉलेज के यहां से स्थानांतरित होने के बाद डाक विभाग ने इस इमारत को अपने कब्जे में ले लिया। यह ग्रेनाइट, ईंटों और चूने के गारे से बनी एक आयताकार संरचना है। इसमें 5 टॉवर हैं, इमारत के प्रत्येक कोने में एक और एक सामने केंद्र में एक घड़ी के साथ। स्थानीय वास्तुकला को ध्यान में रखते हुए टावरों में पिरामिडनुमा छत है।

तिरुवनंतपुरम किला डाकघर भवन महारानी गौरी पार्वती बाई द्वारा निर्मित श्री पदम पैलेस का हिस्सा था। महल परिसर में दो नालुकेट्टू, दो मंजिला इमारतें और एक मुख्य इमारत शामिल थी। इस इमारत का उपयोग कभी महल परिसर के आउटहाउस के रूप में किया जाता था। इमारत में लकड़ी का फर्श, बालकनी और रेलिंग, छत के राफ्टर हैं। लकड़ी की ढलान वाली छत मैंगलोर टाइल्स से तैयार की गई है।

ग्वालियर के महाराज बाड़ा में स्थित लश्कर डाकघर शहर के सबसे प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जिसमें भव्य सफेद संगमरमर के मंच पर जीवाजी राव सिंधिया की प्रतिमा के केंद्र में विभिन्न स्थापत्य शैली में निर्मित लगभग

सात इमारतें हैं। डाकघर की इमारत उन सात इमारतों में से एक है। यह एक ऊंचे चबूतरे पर बनी एक आयताकार संरचना है। इमारत का अगला भाग ग्रीक शैली में डिज़ाइन किया गया है।

नागपुर जीपीओ, जो मूल रूप से मध्य प्रांत और बरार के तत्कालीन पोस्टमास्टर जनरल का मुख्यालय था, का निर्माण 1921 में किया गया था। विरासत भवन वास्तुकला की विक्टोरियन शैली से अत्यधिक प्रभावित है।

निदेशक लेखा कार्यालय (डाक) नागपुर में एक भव्य जॉर्जियाई शैली की इमारत है। नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. सीवी रमन, जिन्होंने कार्यालय के उप महालेखाकार के रूप में कार्य किया, उन कई प्रतिष्ठित हस्तियों में से एक थे जिनके साथ जुड़ने का सम्मान प्राप्त हुआ था। यह कार्यालय संपूर्ण सेना डाक सेवा कोर के साथ-साथ महाराष्ट्र और गोवा डाक सर्कल दोनों के लिए वेतन और लेखा कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

पुणे एचपीओ की शुरुआत तब हुई जब शहर की पहली टेलीग्राफ लाइन 1854 में यहां स्थापित की गई थी। इस संरचना को 1873 में कर्नल फिंच आरई द्वारा डिज़ाइन और निर्मित बड़ी संरचना द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। हालांकि वर्तमान इमारत एक पुनर्निर्मित इमारत है, जिसे 1903 में नवीकृत किया गया था जब इसमें एक गुंबद और एक सामने का बरामदा जोड़ा गया। यह विरासत भवन पल्लडियन शैली से अत्यधिक प्रभावित है जिसका 19वीं और 20वीं शताब्दी में यूरोप के साथ-साथ उसके उपनिवेशों में नवीकरण हुआ था।

पुडुचेरी प्रधान डाकघर की इमारत 18वीं सदी के मध्य की है। इमारत का पुराना हिस्सा अब 1980 के दशक में बनी आधुनिक इमारत के पीछे है। यह कभी उद्योगपति हेनरी गैबेले का था, जो एक फ्रांसीसी सूती धागा और कपड़ा निर्माता और राजनीतिज्ञ थे, जो 1907 से 1928 तक फ्रांसीसी भारत में पांडिचेरी के मेयर और 1922 से 1924 तक फ्रांसीसी भारत के सीनेटर थे।

चेन्नई जीपीओ (तब मद्रास जीपीओ के नाम से जाना जाता था) की स्थापना 1884 में हुई थी। 'इमारत' को ब्रिटिश वास्तुकार रॉबर्ट फेलोस चिशोल्म द्वारा डिज़ाइन किया गया था।

फिलैटी ब्यूरो चेन्नई भवन का निर्माण 1900 में दक्षिण भारत के पहले इलेक्ट्रिक थिएटर में से एक के रूप में किया गया था। इसे वारविक मेजर और उनके साथी रेजिनाल्ड आयर ने डिज़ाइन किया था। यह इमारत 1951 में डाक विभाग द्वारा खरीदी गई थी और इसका उपयोग माउंट रोड पोस्ट ऑफिस के लिए किया जाता था। 1998 में इसे फिलाटेलिक ब्यूरो के रूप में विकसित किया गया।

लखनऊ जीपीओ भवन को एक ब्रिटिश वास्तुकार द्वारा रिंग थिएटर के रूप में डिज़ाइन किया गया था और इसका उपयोग ब्रिटिश परिवारों द्वारा मनोरंजन उद्देश्यों के लिए किया जाता था। इसका उपयोग अंग्रेज़ी फिल्मों और नाटकों की स्क्रीनिंग के लिए एक मंच के रूप में भी किया

फिलैटी ब्यूरो, चेन्नई

लखनऊ जीपीओ बिल्डिंग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जाता था। उस समय भारतीयों को इस इमारत में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। बाद में इसे एक अदालत में बदल दिया गया जहां मई 1926 में काकोरी मुकदमा चला। 1929-32 में इसे जीपीओ में परिवर्तित कर दिया गया।

आगे बढ़ने का रास्ता

वर्तमान में, डाक विभाग के पास पर्यटन प्रयोजनों के लिए विरासत भवनों को बढ़ावा देने की कोई नीति नहीं है क्योंकि वर्तमान में इन सभी भवनों का उपयोग कार्यालयों के रूप में किया जा रहा है और अधिकांश प्रशासनिक और परिचालन क्षेत्र आम जनता के लिए सीमा से बाहर हैं। डाक विभाग द्वारा बहुमूल्य डाक विरासत को प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में परिवर्तित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं-

- पर्यटन प्रयोजन के लिए विरासत भवनों को खोलने के लिए एक नीति अधिसूचित करें। यह पर्यटन मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय के परामर्श से किया जा सकता है।
- अपनी विरासत इमारतों के इतिहास पर शोध और संकलन करें और ऐसी इमारतों के सामने आकर्षक साइनेज पर उनके बारे में रोचक तथ्य प्रदर्शित करवाएं। इसे प्रचार के लिए सोशल मीडिया और पर्यटक पुस्तिकाओं और यात्रा पुस्तकों में भी रखा जा सकता है। ऐसी इमारतों को नियमित पर्यटक सर्किट/यात्रा कार्यक्रम में शामिल करने के लिए संबंधित शहरों/कस्बों के पर्यटक गाइड गिल्ड को भी शामिल किया जा सकता है।
- विरासत भवनों को उनके मूल डिज़ाइन के अनुसार पुनर्स्थापित करें।
- ऐसी इमारतों के मुख्य क्षेत्रों को आधिकारिक उपयोग से मुक्त करें और उन्हें पर्यटकों और गाइडों के लिए सुलभ बनाएं।
- ऐसी इमारतों के कुछ हिस्सों में स्थानीय डाक इतिहास पर संग्रहालय स्थापित करें।
- इसे सतत बनाने के लिए डाक विरासत पर्यटन को विभाग की राजस्व अर्जन गतिविधियों में से एक के रूप में शामिल करें। वास्तव में, विरासत भवन के जीर्णोद्धार को आंशिक रूप से प्रवेश टिकटों, स्मृति चिह्नों की बिक्री आदि से वित्तपोषित किया जा सकता है।

हमारी समृद्ध डाक विरासत को बढ़ावा देने से न केवल हमारे कस्बों और शहरों में पर्यटक आकर्षण पैदा होगा और स्थानीय रोज़गार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि हमारी ऐतिहासिक इमारतों की बहाली और रखरखाव में भी मदद मिलेगी। ❑

Publications Division is now on amazon.in

More than 400 live titles of books Available

- Rashtrapati Bhavan Series
- Gandhian Literature
- Indian History
- Personalities & Biographies
- Speeches and Writings
- Art & Culture
- Exam Preparation
- Children's Literature

Visit Our Store at Amazon.in

Scan this QR Code

Publications Division

Ministry of Information & Broadcasting, Government of India

Our publications are also available online at:

www.bharatkosh.gov.in

www.publicationsdivision.nic.in

For placing orders, please contact: Ph : 011-24365609, e-mail: businesswng@gmail.com

/publicationsdivision /dpd_india DPD_India YojanaJournal

पर्यटन के माध्यम से तैयार होगा ग्रामीण सांस्कृतिक पथ

-हेमंत मेनन

ग्रामीण भारत में उत्कृष्ट शिल्प कौशल से लेकर जीवंत प्रदर्शन कला तक, सांस्कृतिक परंपराओं की विशाल संपदा मौजूद है। इन खजानों के संरक्षण एवं संवर्धन में पर्यटन पथ की अहम भूमिका है। देश भर में मौजूद सांस्कृतिक पर्यटन मार्ग भारत को एकसूत्र में पिरोने के साथ रोज़गार, जीवन स्तर की गुणवत्ता के भी महत्वपूर्ण कारक हैं। ये रास्ते स्थानीय विरासत को सहेजने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि पर्यटन की भौतिक संरचनाओं की पहुँच को आसान बनाने के साथ उसकी सुंदरता के वर्णन की सहज और सरल व्यवस्था हो। यह सामुदायिक भागीदारी से ही संभव है। देश के अलग-अलग हिस्सों में पर्यटन केंद्रों के विकास में ग्रामीण सांस्कृतिक पथ अत्यंत प्रभावी केंद्र बनकर उभरे हैं।

पीढ़ियों से चली आ रही काशी और कांचीपुरम की उत्कृष्ट हथकरघा बुनाई से लेकर गाँव के चौराहों पर गूंजने वाले जीवंत लोक संगीत तक ग्रामीण सांस्कृतिक पथ के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हालांकि, वैश्वीकरण और बदलती जीवनशैली से इन परंपराओं को पर्यटन के मानचित्र पर लाने की आवश्यकता है। एकीकृत दृष्टिकोण के साथ विकसित सांस्कृतिक पर्यटन पथ को प्रभावी प्रचार के ज़रिए व्यापक अवसर के क्षेत्र में तब्दील किया जा सकता है। यह सांस्कृतिक पथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकने के साथ नई पीढ़ी को स्थानीय विरासत पर गर्व की प्रेरणा भी देते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन पथों का बहुआयामी महत्व

ग्रामीण सांस्कृतिक पथ आगंतुकों को ग्रामीण क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को दिल से जोड़ते हैं। ये रास्ते स्थानीय शिल्प, पारंपरिक कला रूपों, विरासत स्थलों और गहन सांस्कृतिक अनुभवों से लोगों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। इन सांस्कृतिक पर्यटन पथ को समृद्ध और प्रामाणिक समझ देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ग्रामीण समुदायों के लिए इन पगडंडियों का बहुआयामी महत्व है। आर्थिक रूप से यह नई आजीविकाएं

लेखक कला और संस्कृति पर एक नियमित स्तंभकार हैं और स्पिक मैके के राष्ट्रीय समन्वयक हैं। ई-मेल : hemanth@spicmacay.com

सृजित करते हैं। इससे स्थानीय कारीगरों को आर्थिक और सामाजिक उत्थान का जरिया मिलता है। यहां सामाजिक रूप से सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को संरक्षित करके सामुदायिक गौरव की भावना पैदा करते हैं।

एक सफल सांस्कृतिक पथ का निर्माण केवल कुछ स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर जोड़ने से कहीं अधिक होता है। इसके लिए किसी क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक संपत्तियों की गहरी समझ और एक सम्मोहक कथा के निर्माण की आवश्यकता होती है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

भौतिक और अमूर्त विरासत का साझा पर्यटन स्थल: पर्यटन पथ में भौतिक और प्रथाओं के रूप में मौजूद दोनों ही सांस्कृतिक संपत्तियां शामिल होनी चाहिए। किसी भी जगह के ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर और पारंपरिक गाँव की वास्तुकला अतीत की झलक पेश करती है। अमूर्त विरासत पीढ़ियों से चली आ रहे सांस्कृतिक अनुभूति को व्यक्त करती है। कच्छ में मास्टर बुनकरों के कौशल, केरल में थेय्यम प्रदर्शन की स्पंदित लय, या सदियों पुरानी आयुर्वेदिक चिकित्सकों का ज्ञान। प्राकृतिक परिदृश्य अपने आप में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संपत्ति हो सकता है, जिसमें पवित्र उपवन, झरने, या कृषि पद्धतियाँ स्थानीय परंपराओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। इस दिशा में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सर्वश्रेष्ठ प्रथाएं देखने को मिलती हैं। इथियोपियाई रूढ़िवादी चर्च परंपरा 'चर्च वन', पूजा स्थलों के आसपास के पवित्र उपवनों का रखरखाव करती है। ये वन आध्यात्मिक श्रद्धा और समृद्ध जैव विविधता का एक अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। हमारे देश के कोने-कोने में असंख्य मंदिरों में वन देवताओं की पूजा की जाती है। ऐसे वन मंदिरों की ओर पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करने वाले सांस्कृतिक रास्ते ग्रामीण आध्यात्मिकता की संपदा के बारे में उनकी जागरूकता को समृद्ध कर सकते हैं।

भारत का ग्रामीण परिदृश्य जीवंत प्रदर्शन कलाओं से जीवंत है, जो इसके समुदायों की आत्मा में एक खिड़की पेश करते हैं। प्राचीन किंवदंतियों को दोहराने वाले लयबद्ध

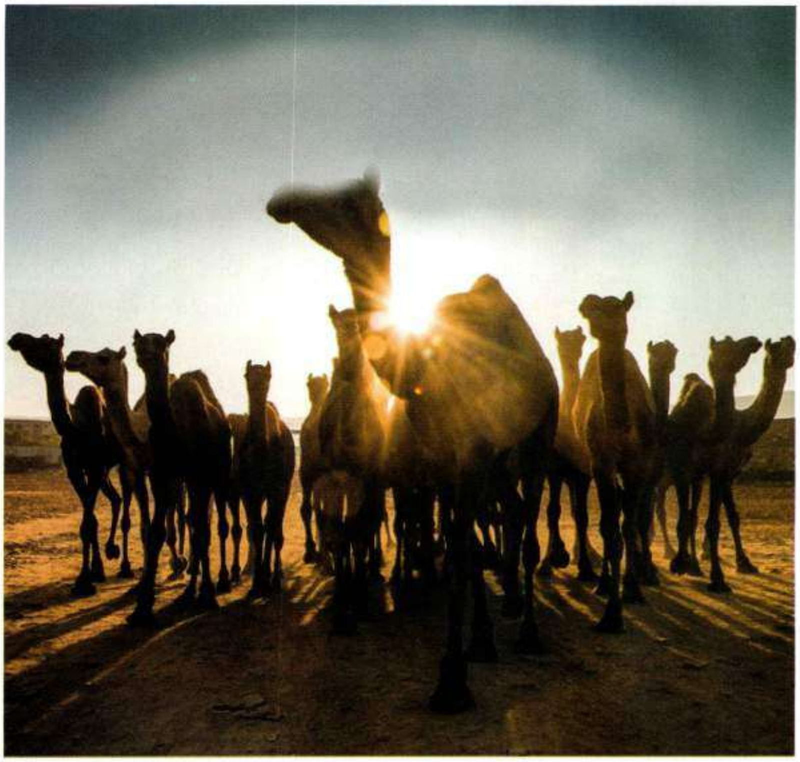

पुष्कर मेला, राजस्थान

नृत्यों और नाटकों से लेकर विरासत में मिले लोक गीतों की भावपूर्ण धुनों तक, ये कला रूप किसी क्षेत्र की पहचान के ताने-बाने में महत्वपूर्ण सूत्र बनाते हैं। लोक नृत्य संगीत, नाटक और कठपुतली सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाते हैं। ओडिशा में एक निशान गतिशील 'डंडा नाचा' के प्रदर्शन के आसपास केंद्रित हो सकता है (डंडा नाचा एक लोक नृत्य है जो गंजम क्षेत्र की समृद्ध लोक परंपरा का हिस्सा है। यह एक गीत और नृत्य प्रदर्शन है जो केवल संगीत वाद्ययंत्र के रूप में झांझ का उपयोग करता है। नृत्य भगवान कृष्ण की कहानी बताने और भगवान शिव और देवी काली के प्रति भक्ति दिखाने के लिए प्रदर्शन किया जाता है), जबकि राजस्थान के अनुभव में न केवल ब्लॉक-प्रिंटरों को काम करते हुए देखना शामिल हो सकता है, बल्कि मांगनियार संगीतकारों को पीढ़ियों से चली आ रही धुनों को सुनना भी शामिल हो सकता है।

सांस्कृतिक पर्यटन पथ में विविधता : सांस्कृतिक पर्यटन पथ में जीवन के विभिन्न लोकरंग समाहित होते हैं। यह किसी विशिष्ट शिल्प के इतिहास, स्थानीय त्यौहार के विकास, या लोगों और उनकी भूमि के बीच जटिल संबंध को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में लिविंग ट्रेडिशन चंदेरी आगंतुकों को चंदेरी बुनाई के इतिहास और तकनीकों की यात्रा पर ले जा सकता है, जिसमें कारीगरों के कौशल और कपड़े में बुने गए जटिल रूपांकनों का प्रदर्शन किया जा सकता है। बंगाल, झारखंड और ओडिशा में छाऊ नृत्य के शक्तिशाली रूप दैनिक जीवन के साथ-साथ पौराणिक आख्यानों एवं महाकाव्य के जीवन की कहानियां भी बताते हैं।

सम्मानजनक अन्वेषण : ध्यान हमेशा वास्तविक आदान-प्रदान और परंपराओं के सम्मान पर होना चाहिए। आगंतुकों को इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को आकार देने वाले कौशल, विश्वास और दैनिक जीवन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए। ग्रामीण कला आम आदमी की कच्ची जीवनशैली से उभरी और जरूरी नहीं कि इसका उद्देश्य प्रोसेनियम सेटिंग हो; इस प्रकार प्रारंभिक निर्णय यह हो सकता है कि मंचित प्रदर्शन या अप्रामाणिक अनुभवों से संभवतः बचा जाना चाहिए। सांस्कृतिक रास्ते तब फलते-फूलते हैं जब वह प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं जो वास्तव में किसी स्थान की आत्मा को दर्शाते हैं। पर्यटक स्थानीय समुदायों और उनके जीवन के तरीकों के साथ वास्तविक जुड़ाव चाहते हैं। पथ को किसी स्थानीय उत्सव के साथ मेल खाने के लिए डिजाइन किया जा सकता है। किसी उत्सव को उसके पारंपरिक स्वरूप में व्यवस्थित रूप से प्रकट होते देखना- चाहे वह पुष्कर मेले की ऊंट दौड़ हो या जैसलमेर में डेजर्ट फेस्टिवल में लोक नृत्य- एक कृत्रिम वातावरण में दोहराने के लिए असंभव समझ की गहराई प्रदान करता है। सफल सांस्कृतिक पथ में स्थानीय समुदाय के साथ और उनके द्वारा तैयार कृतियों की प्रमुखता होती है। समुदाय के सदस्यों को योजना, प्रबंधन और पथ से प्राप्त लाभों में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। इससे कलाकारों, स्थानीय शिल्पकारों एवं पर्यटन उद्योग से जुड़ी प्रतिभाओं की सहभागिता सुनिश्चित होती है। अंततः वह पर्यटन राजस्व के प्राथमिक लाभार्थी के रूप में उभरते हैं।

विभिन्न प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करने और समुदाय के लिए व्यापक लाभ सुनिश्चित करने की कुंजी पहुँच मार्ग का सुविधाजनक होना है। विशेष रूप से विकलांग लोगों के लिए सांस्कृतिक पर्यटन पथ और स्थलों की भौतिक पहुँच से जुड़े पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए। जानकारी को कई भाषाओं में उपलब्ध कराने, साइनेज उपलब्ध कराने और स्थानीय गाइडों को प्रशिक्षित करने से पर्यटन को समावेशी रूप दिया जा सकता है। यहां

तक की पर्यटन सुविधाएं सामर्थ्य और विभिन्न आय क्षमता को पूरा करने वाली हों।

एक सफल सांस्कृतिक पथ के मूल में स्थिरता होनी चाहिए। इसका मतलब पर्यटन को इस तरह से प्रबंधित करना है जिससे प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ समुदाय के सांस्कृतिक ताने-बाने की भी रक्षा हो सके। आगंतुकों की संख्या सीमित करने, पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को बढ़ावा देने और स्थानीय संसाधनों पर पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने जैसी रणनीतियों पर ध्यान करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

पर्यटन के स्पष्ट दायरे से परे सोचना

इसमें कम-ज्ञात आकर्षणों और स्थलों की संभावनाओं को पहचानना और उनका दोहन करना शामिल है जो पर्यटक पहल पर विचार करते समय तुरंत दिमाग में नहीं आते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण प्रकाशस्तंभ है, जो किसी क्षेत्र के समग्र पर्यटन परिदृश्य में योगदान करते हुए पर्यटकों के लिए अद्वितीय और सम्मोहक अनुभव प्रदान कर सकता है। पारंपरिक रूप से जहाजों का मार्गदर्शन करने और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए प्रकाशस्तंभ ऐतिहासिक, स्थापत्य और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। यह अक्सर ऊबड़-खाबड़ समुद्र तटों पर एकान्त प्रहरी के रूप में खड़े रहते हैं, जो लुभावने दृश्य और समुद्री इतिहास की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। हाल के वर्षों में, कई देशों ने इन संरचनाओं की पर्यटन क्षमता को पहचानना शुरू कर दिया है और लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पहल विकसित की है।

उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, राष्ट्रीय उद्यान सेवा कई ऐतिहासिक प्रकाशस्तंभों का प्रबंधन करती है जो पर्यटन के लिए खुले हैं। पर्यटक नेविगेशन में प्रकाशस्तंभों की भूमिका के बारे में जान सकते हैं, इन संरचनाओं की अनूठी वास्तुकला का पता लगा सकते हैं और आसपास के परिदृश्य के मनोरम दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। निर्देशित पर्यटन के अलावा, कुछ प्रकाशस्तंभ रात्रि विश्राम की पेशकश करते हैं, जिससे आगंतुकों को एक गहन अनुभव और तटीय वातावरण के एकांत और सुंदरता की सराहना करने का मौका मिलता है। इसी तरह, भारत में, अपनी विशाल तटरेखा और समृद्ध समुद्री इतिहास के साथ, प्रकाशस्तंभ पर्यटन के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देकर, अधिकारी समुद्री विरासत, वास्तुकला और तटीय परिदृश्य में रुचि रखने वाले आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं। प्रकाश स्तंभों पर आयोजित निर्देशित पर्यटन, शैक्षिक कार्यक्रम और सांस्कृतिक कार्यक्रम आगंतुकों के अनुभवों को बढ़ा सकते हैं और स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में योगदान कर सकते हैं। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के साथ भारत का तट, प्रकाशस्तंभों से भरा हुआ है जो न केवल नौवहन सहायता के रूप में काम करते हैं बल्कि ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व भी रखते हैं। तमिलनाडु में पूम्पुहार के प्राचीन बंदरगाह और वहां के लाइटहाउस,

लाहौल स्पीति, हिमाचल प्रदेश

अलाप्पुझा लाइटहाउस, केरल

कर्नाटक में कौप लाइटहाउस और केरल में अलाप्पुझा लाइटहाउस सहित स्थानों को आकर्षक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह समुद्री इतिहास की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं और समुद्र तट के मनोरम दृश्य उपलब्ध होंगे।

प्रकाशस्तंभों के अलावा, ऐसे कई अन्य वंचित मामले हैं जिनमें पर्यटन विकास के लिए अप्रयुक्त संभावनाएं है। इनमें शामिल हो सकते हैं:

औद्योगिक विरासत स्थल : पूर्व औद्योगिक स्थल, जैसे पुराने कारखाने, खदानें और गोदाम, किसी क्षेत्र के औद्योगिक इतिहास में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। विरासत और औद्योगिक पुरातत्व में रुचि रखने वाले पर्यटकों को ये स्थल दिलचस्प लग सकते हैं। भारत में, समृद्ध औद्योगिक विरासत वाले कई क्षेत्र हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी में रूहर क्षेत्र ने अपनी पूर्व कोयला खदानों और इस्पात संयंत्रों को सांस्कृतिक आकर्षणों में बदल दिया। इसी तरह, झारखंड में जमशेदपुर जैसे क्षेत्र, जो अपने इस्पात उद्योग के लिए जाना जाता है, और पश्चिम बंगाल में रानीगंज, जो भारत के सबसे पुराने कोयला खनन क्षेत्रों में से एक है, औद्योगिक विरासत पर्यटन पहल विकसित कर सकते हैं। पुराने कारखानों, खदानों और गोदामों के दौरे के साथ, इन उद्योगों के इतिहास और विकास को प्रदर्शित करने के लिए पर्यटन का आयोजन किया जा सकता है। स्थानीय समुदायों पर इन उद्योगों की तकनीकी प्रगति और सामाजिक प्रभाव के बारे में पर्यटकों को शिक्षित करने के लिए व्याख्यात्मक केंद्र या संग्रहालय स्थापित किए जा सकते हैं।

कृषि पर्यटन : कृषि परिदृश्य और कृषि परंपराओं वाले ग्रामीण क्षेत्र पर्यटकों के लिए प्रामाणिक और गहन अनुभव प्रदान कर सकते हैं। फार्म स्टे, कृषि पर्यटन और फसल उत्सव जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों को खेती के तरीकों के बारे में जानने, स्थानीय किसानों के साथ बातचीत करने और खेत की ताज़ा उपज का आनंद लेने की अनुमति देती हैं। यह इको टूरिज्म को भी नया आयाम प्रदान करेगा। प्रोवेंस, फ्रांस में लैवेंडर फ़ील्ड और नापा वैली, कैलिफ़ोर्निया के अंगूर के बाग, कृषि पर्यटन स्थलों के उदाहरण हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, विशेष रूप से पंजाब, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में, जीवंत कृषि परिदृश्य और कृषि परंपराएं हैं। ये क्षेत्र फार्म स्टे, कृषि पर्यटन अनुभव और फार्म-टू-टेबल डाइनिंग अनुभव प्रदान करके कृषि पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं। आगंतुकों को टिकाऊ

कृषि पद्धतियों, जैविक खेती तकनीकों और पारंपरिक कृषि विधियों के बारे में सिखाने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

डार्क स्काई पर्यटन : न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण वाले क्षेत्र तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए आदर्श हैं। डार्क स्काई रिजर्व और वेधशालाएं आगंतुकों को खगोलीय घटनाओं को देखने, खगोल विज्ञान के बारे में जानने और रात के आकाश की सुंदरता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती हैं। इंटरनेशनल डार्क-स्काई एसोसिएशन दुनिया भर में डार्क स्काई स्थानों को नामित करता है, जैसे कि आयरलैंड में केरी इंटरनेशनल डार्क स्काई रिजर्व। भारत में कई ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण है, जो उन्हें अंधेरे आकाश पर्यटन के लिए आदर्श बनाता है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी और ग्रामीण राजस्थान के कुछ हिस्से तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। स्थानीय समुदाय तारों को देखने के दौरों और खगोल विज्ञान कार्यशालाओं की सुविधा के लिए डार्क स्काई रिजर्व या वेधशालाएँ स्थापित कर सकते हैं। ग्रामीण परिवेश में महत्व अनुभव चाहने वाले खगोल पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इको-लॉज या होमस्टे जैसे आवास विकल्प विकसित किए जा सकते हैं।

सामुदायिक भागीदारी से ग्रामीण पर्यटन बनेगा समावेशी

टिकाऊ ग्रामीण पर्यटन के लिए स्थानीय समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। सामुदायिक भागीदारी स्थानीय मूल्यों और ज़रूरतों के साथ तालमेल सुनिश्चित करती है। यह स्वामित्व और ज़िम्मेदारी को बढ़ावा देती है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण परंपराओं को पुनर्जीवित करने और कारीगरों को समर्थन देने की कुंजी है। पर्यावरण संरक्षण अभिन्न अंग है, ग्रामीण परिदृश्य और जैव विविधता की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देना। क्षमता निर्माण स्थानीय लोगों को रोज़गार और उद्यमिता के लिए कौशल प्रदान करता है। लाभों का समान वितरण असमानताओं को कम करते हुए समावेशी विकास सुनिश्चित करता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे पर्यटक और मेजबान दोनों समृद्ध होते हैं। दीर्घकालिक स्थिरता के लिए व्यापक योजना, हितधारक सहयोग और प्रभावों की निगरानी की आवश्यकता होती है। इन प्रयासों के माध्यम से, ग्रामीण पर्यटन सकारात्मक परिवर्तन, संस्कृति के संरक्षण, समुदायों का समर्थन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए उत्प्रेरक के रूप में पनप सकता है।

स्थायी ग्रामीण पर्यटन को लागू करने में, सामुदायिक भागीदारी सर्वोपरि है, स्थानीय मूल्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना है। सांस्कृतिक संरक्षण पहल, जैसे विरासत संरक्षण परियोजनाएं और सांस्कृतिक त्यौहार, स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यटकों के अनुभवों को समृद्ध करते हैं। अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊ परिवहन जैसे पर्यावरण संरक्षण उपाय ग्रामीण परिदृश्य और जैव विविधता की सुरक्षा करते हैं। क्षमता निर्माण स्थानीय लोगों को रोज़गार और उद्यमिता के लिए कौशल प्रदान करता है। यह पर्यटन उद्योग के समावेशी विकास में योगदान देता है। इन रणनीतियों को अपनाने से, ग्रामीण पर्यटन सकारात्मक बदलाव, संस्कृति के संरक्षण, समुदायों का समर्थन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए उत्प्रेरक बन जाता है। निरंतर सहयोग और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से, ग्रामीण गंतव्य आगे बढ़ सकते हैं। यह पर्यटकों को प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं। यह आगंतुकों और स्थानीय निवासियों दोनों के हित में है। पर्यटकों को अपनी अगली यात्राएं आरक्षित करने से पहले, उन्हें जागरूक पर्यटन की शक्ति पर विचार करना चाहिए और ऐसे गंतव्यों और अनुभवों का चयन करना चाहिए जो ग्रामीण समुदायों का उत्थान करें और उनकी बहुमूल्य सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करें। ❑

प्रकाशन विभाग

परीक्षा तैयारी

के लिए

हमारा संग्रह

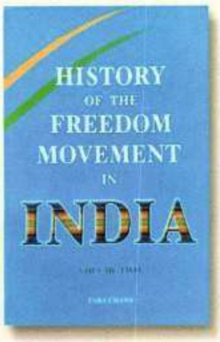

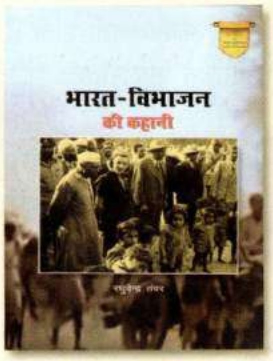

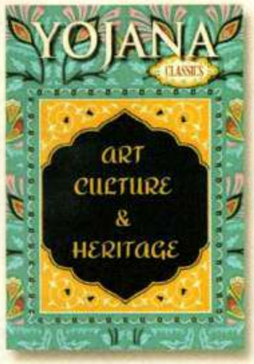

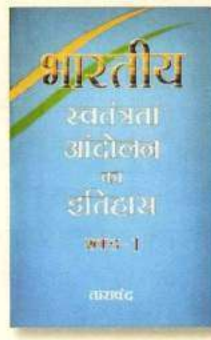

व अन्य कई ...

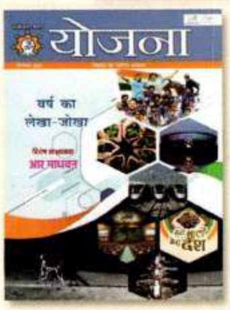

रोज़गार संबंधी जानकारी और महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर गहन विश्लेषण के लिए हर सप्ताह पढ़ें **रोज़गार समाचार**

सब्सक्राइब करें : www.employmentnews.gov.in

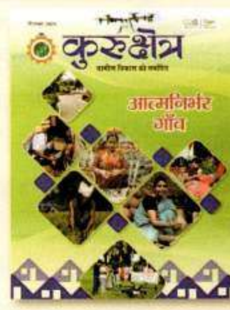

खरीदने के लिए : **www.publicationsdivision.nic.in**

संपर्क करें:

पुस्तकों के लिए :	✉	businesswng@gmail.com	✆	01124365609
पत्रिकाओं के लिए:	✉	pdjucir@gmail.com	✆	01124367453

सूचना भवन, सीजीओ काम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

जम्मू-कश्मीर पर्यटन वृद्धि और विकास की ओर

-इर्तिफ़ लोन

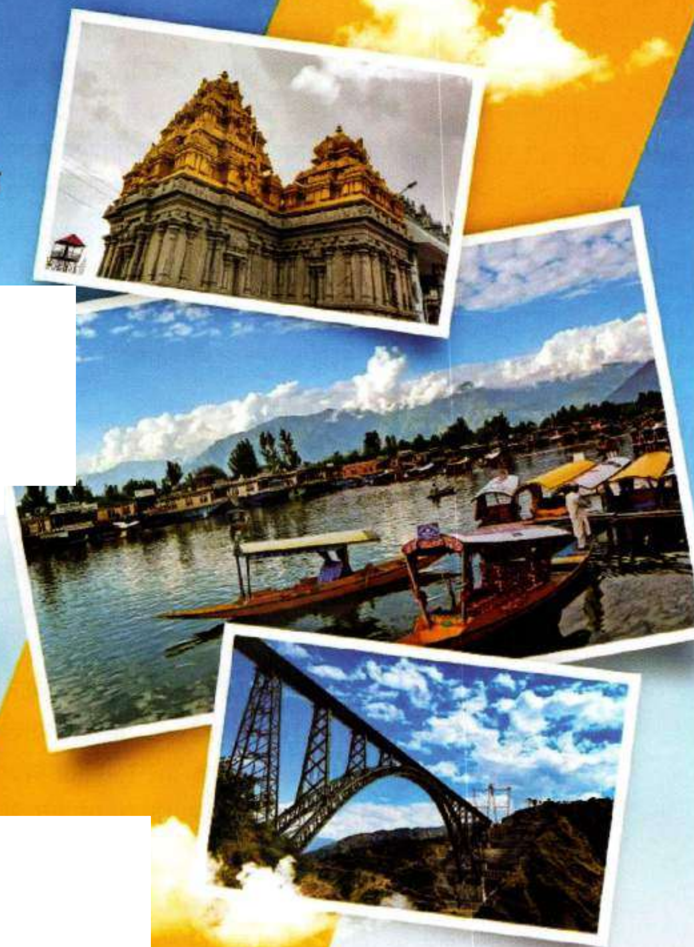

जम्मू-कश्मीर का पर्यटन क्षेत्र विस्तार और विकास कर रहा है। पर्यटकों के आगमन में 155% की वृद्धि हुई है, जो एक अग्रणी वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में इस क्षेत्र की क्षमता को रेखांकित करता है। होमस्टे की बढ़ती प्रवृत्ति इसे एक ज़मीनी स्तर के आंदोलन के रूप में चित्रित करती है जो प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है। होमस्टे के माध्यम से विरासत का संरक्षण ऐतिहासिक वास्तुकला और अतिथि संतुष्टि के बीच एक पारस्परिक रूप से लाभप्रद संबंध है। इसके अतिरिक्त, धार्मिक तीर्थयात्राएं, स्थिरता पहल और हिमालय में बढ़ते साहसिक पर्यटन दृश्य शामिल हैं। जम्मू और कश्मीर एक समग्र गंतव्य है, जो आध्यात्मिकता, प्राकृतिक आकर्षण, सांस्कृतिक विविधता और टिकाऊ प्रथाओं का सहज मिश्रण है, जो वैश्विक यात्रियों को मंत्रमुग्ध करने के लिए तैयार है।

अक्सर 'पृथ्वी पर स्वर्ग' के रूप में जाना जाने वाला जम्मू और कश्मीर हाल ही में एक समृद्ध पर्यटक आकर्षण केंद्र के रूप में उभरा है। पर्यटकों के आगमन में वृद्धि, जिसमें घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटक शामिल हैं, इस क्षेत्र के मनमोहक आकर्षण के प्रति पर्यटकों की बढ़ती रुचि का संकेत है। सांख्यिकीय साक्ष्य सम्मोहक हैं, जो पर्यटकों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि का खुलासा करते हैं और जम्मू-कश्मीर में पर्यटन उद्योग के लिए एक नए युग का संकेत देते हैं।

सांख्यिकीय परिदृश्य भारत में बढ़ते पर्यटन क्षेत्र की एक आकर्षक तस्वीर पेश करता है, जिसमें जम्मू और कश्मीर में 2021 और 2022 के पिछले वर्षों की तुलना में 2023 में समग्र पर्यटक आगमन में 155% की आश्चर्यजनक वृद्धि का अनुभव हुआ है। यह तेज़ी से वृद्धि भारतीय उपमहाद्वीप के एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में अपार क्षमता और आकर्षण को रेखांकित करती है।

2023 में कश्मीर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन ने जम्मू-कश्मीर के पर्यटन परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिससे एक आकर्षक और सुरक्षित गंतव्य के रूप में कश्मीर की सकारात्मक वैश्विक धारणा में योगदान हुआ।

इस आयोजन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में धन का संचार करके जम्मू और कश्मीर को आर्थिक रूप से ठोस लाभ पहुँचाया। विदेशी प्रतिनिधियों और पर्यटकों के आगमन से आतिथ्य, परिवहन और स्थानीय व्यवसायों जैसे क्षेत्रों को वित्तीय बढ़ावा मिला। इस आर्थिक इंजेक्शन ने न

लेखक नवीन हस्तक्षेपों, स्टार्टअप पहलों और नीति निर्माण में विशेषज्ञता रखते हैं और वर्तमान में जम्मू और कश्मीर सरकार में अधिकारी हैं।
ई-मेलः irtif_lone@yahoo.co.in

केवल तत्काल जरूरतों को पूरा किया, बल्कि दीर्घकालिक बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश को भी बढ़ावा दिया, जिससे आगंतुकों के लिए क्षेत्र की समग्र अपील और पहुँच में वृद्धि हुई। इस सम्मेलन की सफल मेज़बानी का जम्मू-कश्मीर के पर्यटन उद्योग पर सतत प्रभाव पड़ा है, जिससे इस क्षेत्र को वैश्विक पहचान मिली है और जिसका उपयोग चल रहे प्रचार प्रयासों में किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के लिए एक सक्षम और सुरक्षित गंतव्य के रूप में कश्मीर की सकारात्मक छवि ने अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया है और कश्मीर को एक प्रमुख वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया।

होमस्टे: एक ज़मीनी स्तर का आंदोलन

जम्मू और कश्मीर में होमस्टे उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, अब पूरे केंद्रशासित प्रदेश में 1,485 होमस्टे और 13,000 कमरे पंजीकृत हैं। यह जमीनी स्तर का आंदोलन आगंतुकों को आवास विकल्प और एक प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने में एक सफल रणनीति साबित हो रहा है।

पर्यटन क्षेत्र को हाल ही में उद्योग का दर्जा दिए जाने से महत्वपूर्ण निवेश आकर्षित हुआ है और ये होमस्टे पहल पर्यटकों के बढ़ते प्रवाह को समायोजित करने में सहायक साबित हो रही है। पर्यटन क्षेत्र के असाधारण प्रदर्शन में सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट है, 2022 में 1.88 करोड़ से अधिक पर्यटक आए और 2023 में 2.11 करोड़ पर्यटक आए, जो इस क्षेत्र के लिए अभूतपूर्व वृद्धि का प्रतीक हैं।

आवास उपलब्ध कराने के अलावा, इस कार्यक्रम ने बेरोज़गार युवाओं के लिए रोज़गार के अवसर पैदा किए हैं। इस क्षेत्र में होमस्टे का चयन करने वाले पर्यटक बुनियादी स्तर पर प्रामाणिक स्थानीय संस्कृति का अनुभव करते हुए आरामदायक प्रवास का आनंद लेते हैं।

इसके अलावा, होमस्टे उन क्षेत्रों में आवास और भोजन की चुनौतियों का समाधान करने का एक महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं जहां होटल और रेस्तरां अच्छी तरह से स्थापित नहीं हैं। ऐसे क्षेत्रों में होमस्टे पारंपरिक आवास के अधिक टिकाऊ और स्थानीय रूप से समावेशी विकल्प प्रदान करते हैं। जम्मू-कश्मीर में पर्यटन विकास के लिए सहयोगात्मक और समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए, अब न्यूनतम चार कमरों वाले लोग पर्यटन विभाग के साथ होमस्टे के लिए पंजीकरण करा सकते हैं।

विरासत संरक्षण

पर्यटन के क्षेत्र में, लकड़ी के कॉटेज के रूप में एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति उभर रही है, और पारंपरिक घरों को होमस्टे के रूप में नया जीवन मिलता है। एक अद्वितीय और प्रामाणिक आवास अनुभव प्रदान करने के अलावा, यह परिवर्तन वास्तुशिल्प विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आतिथ्य क्षेत्र में कई संपत्ति मालिक इन ऐतिहासिक संरचनाओं के आंतरिक मूल्य को पहचान रहे हैं, वे जिस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसकी रक्षा करते हुए उनमें नई जान फूंक रहे हैं।

विरासत संपत्तियों को आवास में बदलने का निर्णय बीते युगों की स्थापत्य पहचान को बनाए रखने के ईमानदार प्रयास को दर्शाता है। ये होमस्टे अक्सर सदियों पुराने, अपने-अपने काल के आकर्षण और चरित्र को समाहित करते हैं और मेहमानों को अतीत की एक गहन यात्रा का अनुभव प्रदान करते हैं। प्राचीन फर्नीचर, जटिल लकड़ी के काम और पारंपरिक डिज़ाइन जैसे तत्वों का सावधानीपूर्वक संरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि इन ऐतिहासिक घरों की प्रामाणिकता बरकरार रहे।

विरासत संरक्षण और बढ़ते होमस्टे उद्योग के बीच

कश्मीर का नियाग्रा फॉल्स

सहजीवी संबंध मेहमानों के सकारात्मक स्वागत में स्पष्ट है। आराम करने की जगह से अधिक की तलाश करने वाले यात्री इन सदियों पुराने निवासों के सांस्कृतिक महत्व और इनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अद्वितीय माहौल की सराहना करते हैं। ऐसी बेहतर रखरखाव वाली विरासत संपत्तियों में रहना समय के माध्यम से एक यात्रा बन जाता है, जिससे मेहमानों को क्षेत्र के वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक इतिहास के साथ व्यक्तिगत रूप से जुड़ने का मौका मिलता है।

धार्मिक तीर्थयात्राएं: एक आध्यात्मिक प्रवास

धार्मिक तीर्थयात्राओं ने भी पर्यटन वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। श्री माता वैष्णो देवी के पवित्र गुफा मंदिर ने इस वर्ष कम से कम 95 लाख तीर्थयात्रियों का स्वागत किया, जो पिछले दशक में सबसे अधिक संख्या है। इसी तरह, वार्षिक अमरनाथ यात्रा लगभग 4.5 लाख भक्तों द्वारा दक्षिण कश्मीर हिमालय में गुफा मंदिर में पूजा-अर्चना के साथ संपन्न हुई, जिसने इस क्षेत्र के आध्यात्मिक महत्व और आकर्षण को और उजागर किया।

इन प्रमुख घटनाओं के अलावा, जम्मू और कश्मीर ऐतिहासिक मंदिरों, तीर्थस्थलों और मस्जिदों की विशेषता वाली धार्मिक विविधता की एक समृद्ध टेपेस्ट्री से संपन्न है। हज़रत बल तीर्थस्थल, चरार-ए-शरीफ, शंकराचार्य मंदिर और रघुनाथ मंदिर ऐसे कई स्थलों में से हैं जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करते हैं। धार्मिक पर्यटन न केवल आवास, परिवहन और व्यवसायों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा देता है और विभिन्न क्षेत्रों तथा पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को एक साथ लाता है।

चूंकि यह क्षेत्र एक धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो रहा है, इसलिए तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिए सतत विकास और बेहतर बुनियादी ढांचे की तत्काल आवश्यकता है। जम्मू और कश्मीर में आध्यात्मिकता, प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विविधता का अनूठा मिश्रण इसे उन लोगों के लिए एक समग्र गंतव्य के रूप में स्थापित करता है जो क्षेत्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिदृश्यों में खुद को डुबोते हुए अपने विश्वास के साथ गहरा संबंध चाहते हैं।

पर्यटन में निरंतरता : एक आदर्श बदलाव

जम्मू और कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र में निरंतरता एक केंद्र बिंदु बन गई है, क्योंकि यह क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक-सांस्कृतिक जिम्मेदारी के साथ इस उद्योग के विकास को संतुलित करने का प्रयास करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न पहल और रणनीतिक उपाय लागू किए गए हैं कि जम्मू-कश्मीर में पर्यटन विकास न केवल आर्थिक रूप से व्यवहार्य है बल्कि पारिस्थितिकीय और सामाजिक रूप से भी टिकाऊ है।

फोकस का एक प्रमुख क्षेत्र पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देना है। जम्मू और कश्मीर में सतत पर्यटन प्रयासों में पर्यटक गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना शामिल है। इसमें अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन विकल्पों को बढ़ावा देना शामिल है। इसके अतिरिक्त, क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को संरक्षित करने, इसके नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा करने और यात्रा से जुड़े कार्बन पदचिह्न को कम करने पर जोर दिया गया है।

सामुदायिक भागीदारी और सशक्तीकरण

सामुदायिक भागीदारी और सशक्तीकरण जम्मू-कश्मीर में सतत पर्यटन के अभिन्न अंग हैं। स्थानीय समुदायों को पर्यटन संबंधी गतिविधियों में शामिल करने के लिए पहल शुरू की गई है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सक्रिय रूप से उद्योग में भाग लें और लाभ उठाएं। इस रणनीति के हिस्से के रूप में, होमस्टे न केवल पर्यटकों को अद्वितीय सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करते हैं बल्कि स्थानीय परिवारों को आय का स्रोत भी प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक संरक्षण

सांस्कृतिक संरक्षण जम्मू और कश्मीर में सतत पर्यटन का एक और आवश्यक पहलू है। क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और संवर्धन के प्रयास चल रहे हैं। इसमें ऐतिहासिक स्थलों, पारंपरिक कला एवं शिल्प और स्वदेशी प्रथाओं का संरक्षण शामिल है। जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक विशिष्टता को कायम रख उसका उत्सव मनाते हुए पर्यटन उद्योग का लक्ष्य स्थानीय पहचान के संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए प्रामाणिक अनुभव प्रदान करना है।

इसके अलावा, ज़िम्मेदार पर्यटन प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता जारी है। पर्यटकों के बीच स्थानीय रीति-रिवाजों का सम्मान करने और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने जैसे नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। पर्यावरण अनुकूल और सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार प्रथाओं को प्राथमिकता देने वाले व्यवसायों और व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए सतत पर्यटन प्रमाणन कार्यक्रमों की खोज की जा रही है।

ऑफ-द-बीटन-पाथ होमस्टे: छिपे हुए खजाने का अनावरण

यात्रा के क्षेत्र में, एक बढ़ती प्रवृत्ति घुमंतू लोगों को

पारंपरिक होटलों से दूर ले जा रही है, जिससे वे कम अन्वेषण वाले स्थानों में बसे होमस्टे के आकर्षण की खोज कर रहे हैं। पर्यटक आकर्षण केंद्रों की हलचल से दूर, ये आवास अक्सर गाँवों के बीचों-बीच, बगीचों के बीच, या शांत झीलों के शांत किनारों पर अपना घर पाते हैं। परिणाम एक गहन यात्रा अनुभव है जो सामान्य से परे है और मेहमानों को अन्वेषण और प्रामाणिक मुठभेड़ों की यात्रा पर जाने के लिए आमंत्रित करता है।

होमस्टे, अपने अपरंपरागत स्थानों के साथ, यात्रियों के लिए लीक से हटकर अनुभवों की एक दुनिया खोलते हैं। गाँवों में स्थित, ये आवास छुपे हुए रास्तों और अछूते परिदृश्यों के लिए प्रवेशद्वार प्रदान करते हैं, जिससे मेहमानों को एक क्षेत्र के अनछुए कोनों में जाने का अवसर मिलता है। बगीचों और शांत झीलों के किनारों से घिरे आगंतुकों को सामान्य पर्यटक हलचल से दूर, आराम करने के लिए एक शांत पृष्ठभूमि प्रदान की जाती है।

सुरम्य सेटिंग्स से परे, होमस्टे का आकर्षण प्रामाणिक बातचीत में निहित है जिसका मेहमान स्थानीय समुदायों के साथ आनंद ले सकते हैं। जीवंत गाँव के बाज़ारों से लेकर परिवारों के साथ साझा भोजन तक, ये अनुभव निर्धारित पर्यटक यात्रा कार्यक्रम से कहीं आगे जाते हैं। यात्रियों को इस क्षेत्र की अनकही कहानियों को जानने, सांस्कृतिक टेपेस्ट्री और परंपराओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का मौका मिलता है जो इन कम-अन्वेषित क्षेत्रों की यात्रा को पुनः परिभाषित करते हैं।

संक्षेप में, होमस्टे घिसे-पिटे पर्यटक पथ का विकल्प प्रदान करके यात्रा को फिर से परिभाषित करते हैं। वे केवल आराम करने की जगह से कहीं अधिक बन जाते हैं; वे किसी क्षेत्र की आत्मा के लिए एक पोर्टल के रूप में काम करते हैं; उसके छिपे हुए रत्नों को उजागर करते हैं और वास्तविक संबंधों को बढ़ावा देते हैं। जैसे-जैसे यात्री पारंपरिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा के बजाय प्रामाणिक मुठभेड़ों की तलाश कर रहे हैं, लीक से हटकर बने होमस्टे का आकर्षण लगातार बढ़ रहा है, जो सामान्य से परे उद्यम करने के इच्छुक लोगों के लिए एक समृद्ध और अनूठी यात्रा का वादा करता है।

साहसिक पर्यटन: हिमालय में रोमांच

जम्मू और कश्मीर में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देना एक महत्वपूर्ण फोकस बन गया है, जो क्षेत्र के विविध परिदृश्यों का लाभ उठा रहा है और साहसिक उत्साही लोगों के लिए रोमांचकारी अनुभव प्रदान कर रहा है। ऊंचे पहाड़ों से लेकर प्राचीन नदियों तक, जम्मू-कश्मीर विभिन्न साहसिक गतिविधियों के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि प्रदान करता है, और इन पेशकशों को प्रदर्शित करने और बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं।

ट्रैकिंग ट्रेल्स

जम्मू-कश्मीर में साहसिक पर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण इसके असाधारण ट्रैकिंग ट्रेल्स हैं। हिमालय के चुनौतीपूर्ण इलाके ट्रेकर्स के लिए लुभावने परिदृश्यों का पता लगाने और क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को करीब से देखने का अवसर प्रदान करते हैं। ग्रेट लेक्स ट्रेक और टार्सर मार्सर ट्रेक जैसे लोकप्रिय ट्रैकिंग स्थल दुनिया भर से साहसिक पर्यटन चाहने वालों को आकर्षित करते हैं, जो इस विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र के विकास में योगदान करते हैं।

इस क्षेत्र की नदियों और झीलों का विशाल नेटवर्क जल-आधारित साहसिक गतिविधियों के लिए भी उपयुक्त है। लिद्दर नदी या ज़ांस्कर नदी के अशांत रैपिड्स में व्हाइट-वॉटर राफ्टिंग ने लोकप्रियता हासिल की है, जो

जम्मू और कश्मीर में पैराग्लाइडिंग

चिनाब पुल

चिनाब नदी पर बना विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे पुल

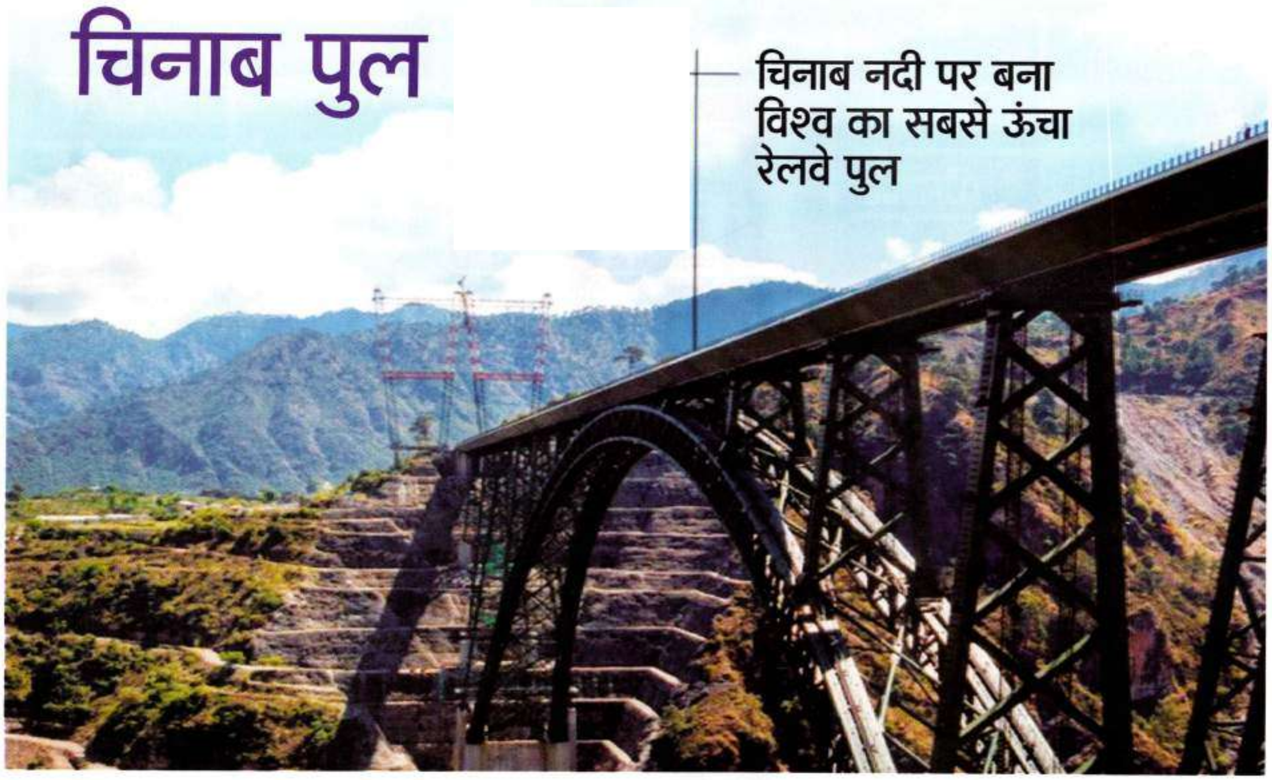

आश्चर्यजनक प्राकृतिक परिवेश के बीच एक एड्रेनालाईन-पंपिंग अनुभव प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन डल झील कयाकिंग और कैनोइंग जैसी गतिविधियों के लिए एक शांत लेकिन साहसिक वातावरण प्रदान करती है।

जम्मू और कश्मीर के बर्फ से ढके पहाड़ शीतकालीन खेल प्रेमियों के लिए खेल के मैदान का काम करते हैं। गुलमर्ग विशेष रूप से स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग के केंद्र के रूप में उभरा है, जो रोमांच चाहने वालों को अपनी विश्वस्तरीय ढलानों की ओर आकर्षित करता है। स्की रिसॉर्ट और केबल कारों सहित अत्याधुनिक सुविधाओं का प्रावधान समग्र साहसिक पर्यटन अनुभव को बढ़ाता है, जिससे जम्मू-कश्मीर शीतकालीन खेलों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है।

क्षेत्र के मनोरम परिदृश्यों का लाभ उठाते हुए पैराग्लाइडिंग के प्रचार ने भी गति पकड़ ली है। सनासर और पहलगाम जैसी जगहों पर पैराग्लाइडिंग गतिविधियाँ पर्यटकों को क्षेत्र की सुंदरता के साथ रोमांच का संयोजन करते हुए, आसमान से जम्मू-कश्मीर के लुभावने दृश्यों का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती है।

साहसिक पर्यटन को और बढ़ावा देने के लिए, इन गतिविधियों को उजागर करने वाले कार्यक्रमों और त्यौहारों का आयोजन किया गया। साहसिक पर्यटन के लिए क्षेत्र की क्षमता को प्रदर्शित करने और वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करने के लिए गुलमर्ग शीतकालीन महोत्सव का आयोजन किया गया है।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे जम्मू और कश्मीर का पर्यटन क्षेत्र लगातार फल-फूल रहा है, रणनीतिक पहल, सतत प्रथाएं और विविध पेशकशें एक प्रमुख वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में इस क्षेत्र की क्षमता को रेखांकित करती हैं। विरासत संरक्षण, धार्मिक महत्व, सतत पर्यटन और साहसिक गतिविधियों का अभिसरण पर्यटन उद्योग में अद्वितीय वृद्धि और विकास के शिखर पर क्षेत्र की व्यापक तस्वीर पेश करता है।

जम्मू और कश्मीर की पर्यटन यात्रा की सफलता सिर्फ संख्या में नहीं बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक संरक्षण और पारंपरिक पर्यटक अनुभवों के परिवर्तन पर स्थायी प्रभाव में मापी जाती है। स्थिरता के प्रति क्षेत्र की प्रतिबद्धता यह सुनिश्चित करती है कि फलता-फूलता पर्यटन उद्योग न केवल वर्तमान पीढ़ी को लाभान्वित करे बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक खजाने को भी संरक्षित करे। जैसे-जैसे यात्री प्रामाणिक, गहन और सतत अनुभवों की तलाश करते हैं, जम्मू और कश्मीर वैश्विक पर्यटन परिदृश्य में एक उदाहरण बनने के लिए तैयार है, जो दुनिया को अपने द्वारा पेश किए जाने वाले विविध आश्चर्यों की खोज करने के लिए आमंत्रित करता है। ❑

हमारी पत्रिकाएँ

योजना
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अँग्रेज़ी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कुरुक्षेत्र
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अँग्रेज़ी)

आजकल
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

बाल भारती
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

घर पर हमारी पत्रिकाएँ मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोश' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है-
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

सदस्यता दरें

प्लान	योजना या कुरुक्षेत्र या आजकल		बाल भारती	
वर्ष	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ
1	₹ 230	₹ 434	₹ 160	₹ 364

ऑनलाइन के अलावा आप डाक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से भी प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल ऑडर या मनीआर्डर '**अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**' के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया 'सदस्यता कूपन' या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें। भेजने का पता है-
संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 779, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें- pdjucir@gmail.com

हमसे संपर्क करें- **फोन : 011-24367453** (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

कृपया नोट करें कि सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद सदस्यता शुरू होने में कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं। कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।

सदस्यता कूपन (नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन)

कृपया मुझे 1 वर्ष के प्लान के तहत .... पत्रिका .... भाषा में भेजें।

नाम (साफ व बड़े अक्षरों में) ....

पता : ....

.... ज़िला .... पिन ....

ईमेल .... मोबाइल नं. ....

डीडी/पीओ/एमओ सं. .... दिनांक .... सदस्यता सं. ....

ग्रामीण मेले एवं उत्सव

-डॉ. सुयश यादव

पर्यटन क्षेत्र में, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर, महामारी से पहले की बहार लौट रही है। त्यौहार और मेलों का आयोजन सदियों से हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है जिसका लाभ पर्यटन क्षेत्र को मिल सकता है और एक पर्यटक की 'प्रामाणिकता' की तलाश को पूरा किया जा सकता है। मेले और त्यौहार सांस्कृतिक पर्यटन आकर्षण हैं। पर्यटन के प्रभावों की जानकारी से युक्त व्यावहारिक दृष्टिकोण मेलों-त्यौहारों को पर्यटन में बदल सकता है; ऐसा उत्पाद जो अंततः देश को आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक लाभ पहुँचाएगा।

यूएनडब्ल्यूटीओ विश्व पर्यटन बैरोमीटर 2024 बताता है कि अंतरराष्ट्रीय पर्यटन में महामारी-पूर्व स्तर का 88% तक सुधार हुआ है। और इसके 2024 के अंत तक पूरी तरह से सामान्य होने की उम्मीद है। भारत पर्यटन सांख्यिकी 2023 में उल्लेख किया गया है कि भारत में बड़े पैमाने पर पर्यटन गतिविधि घरेलू पर्यटन से आई है। वर्ष 2022 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 1731.01 मिलियन और विदेशी पर्यटकों की संख्या 8.59 मिलियन रही। पर्यटन क्षेत्र विदेशी मुद्रा आय का एक बड़ा स्रोत है। पर्यटन का महत्व, विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में, आर्थिक विकास और रोजगार सृजन के साधन के रूप में है। मेलों और त्यौहारों दोनों का उपयोग अधिक आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है और उन्हें अधिक समय तक रुकने के लिए तैयार किया जा सकता है चूँकि पर्यटन के लाभ को या तो पर्यटकों की संख्या बढ़ने से या फिर पर्यटकों के लम्बे समय तक रुकने से बढ़ाया जा सकता है।

लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के पर्यटन अध्ययन संस्थान में सहायक प्रोफेसर हैं। ई-मेल : yadav.suyash@gmail.com

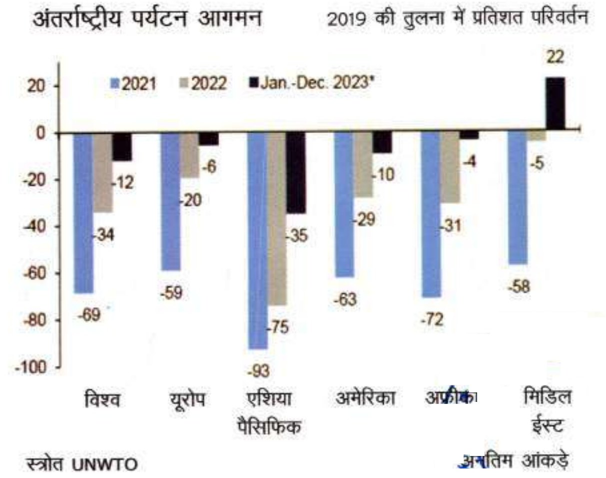

बिना गंतव्य के पर्यटन संभव नहीं है। किसी गंतव्य को विकसित करने और उसे बनाये रखने में पांच A* महत्वपूर्ण है- पहला, आकर्षण जो पर्यटक को उस स्थान की ओर खींच कर लाता है; दूसरा, अभिगम्यता यानी (परिवहन के साधन); आवास (रहने की जगह); सुविधाएं (गंतव्य पर सुविधाएं); गतिविधियाँ (एक पर्यटक की विभिन्न गतिविधियाँ)। 'आकर्षण' गंतव्यों के मार्केटिंग अभियानों में गहन भूमिका निभाते हैं। पर्यटन हेतु मेलों और त्यौहारों का बड़ा आकर्षण है; वे सांस्कृतिक आकर्षण हैं जो इतिहास को दर्शाते हैं। हिंदी शब्द जैसे 'मेला' या 'महोत्सव' या 'उत्सव' भारत में मेलों और त्यौहारों से जुड़े हैं। 'उत्सव' पोर्टल एक डिजिटल पहल है जहाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों को दुनिया भर में लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में प्रोत्साहित करने के लिए भारत में होने वाले उत्सव, त्यौहार और लाइव दर्शन आदि कार्यक्रम दिखाए जाते हैं ताकि पर्यटक आसानी से अपना आगामी यात्रा कार्यक्रम तैयार कर सकें।

मेलों और त्यौहारों का महत्व

भारत में, पारंपरिक मेले और त्यौहार फसलों, बदलती ऋतुओं, धार्मिक मान्यताओं, स्थानीय रीति-रिवाज़ आदि से जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, कई मेले और महोत्सव सरकारी पर्यटन विभागों सहित विभिन्न हितधारकों द्वारा आयोजित किए जाते हैं जिनका उद्देश्य आमतौर पर पर्यटकों का आवागमन बढ़ाना होता है। पर्यटन की दृष्टि से मेलों और त्यौहारों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया है।

आर्थिक महत्व : पर्यटन प्रबंधन में गरीब-समर्थक दृष्टिकोण पर्यटन व्यवसायों और गरीब लोगों के बीच लिंकेज को बढ़ाने की बात करता है ताकि गरीबी कम करने में पर्यटन का योगदान बढ़ सके। गरीब लोग उत्पाद विकास में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेने में सक्षम हैं। भारत में त्यौहारों के दौरान उत्सव आजीविका के अवसर पैदा करते हैं। 2019 से उत्तर प्रदेश अयोध्या में दीपोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। 2023 में, अयोध्या ने एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक संख्या में (2.2 मिलियन से अधिक) दीपक जला कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में प्रवेश किया। ऐसे आयोजन से दीये और पटाखे बनाने वालों को काम मिलता है। दुर्गा पूजा और गणेश पूजा उत्सव के दौरान मूर्ति बनाने वालों को काम मिलना एक अन्य उदाहरण है। अन्य लोकप्रिय प्लेटफार्म जो आर्थिक अवसरों में योगदान करते हैं, में कटक, ओडिशा में आयोजित होने वाला बाली यात्रा फेस्टिवल (खुला व्यापार मेला); हरियाणा में होने वाला सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय क्राफ्ट मेला और राजस्थान में पुष्कर में वार्षिक रूप से आयोजित होने वाला और कई दिनों तक चलने वाला पशुधन पुष्कर मेला शामिल है।

सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व : पारंपरिक भारतीय त्यौहारों का सामाजिक-धार्मिक संदर्भ होता है। धार्मिक त्यौहारों में कुछ मानदंड होते हैं जिन्हें धर्म के सिद्धांतों के अनुसार मनाया जाता है लेकिन वे सभी धर्मों के बीच सामाजिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। पारिवारिक बंधन वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण तनाव में आते हैं; त्यौहार उन्हें बनाए रखने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। भारत में प्रमुख फसल उत्सव (जैसे वांगला, लोहड़ी, नुआखाई आदि) कटाई के दो मौसम रबी और ख़रीफ़ से जुड़े हैं। भारत में मौसम में परिवर्तन को भी मकर संक्रांति (उत्तरायण/शीतकालीन संक्रांति) जैसे त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। पोंगल आदि जैसे त्यौहारों का दिव्य और आध्यात्मिक अर्थ होता है। मकर संक्रांति का अर्थ वह तिथि है जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और तत्पश्चात हिंदू परंपरा में शुभ समारोहों (जैसे विवाह) का आरम्भ हो जाता है।

त्यौहार के माध्यम से एमआईसीई और रूट्स पर्यटन : 'एमआईसीई' में पर्यटन के सभी प्रकार शामिल हैं जो काम/पेशे/व्यवसाय से संबंधित हैं यानी जब लोग मुख्य रूप से मनोरंजक गतिविधियों की वजह से प्रेरित नहीं होते हैं बल्कि अपने काम के कारण यात्रा करते हैं। परिवर्णी शब्द MICE* (बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनियाँ/कार्यक्रम) चार प्रमुख बाज़ार क्षेत्रों को कवर करते हैं। पर्यटन उद्योग में, गंतव्य शादियों को MICE के घटनाक्रमों

*attraction, accessibility, accommodation, amenities, and activities.
*Meeting, Incentive, Conference & Exhibition

अयोध्या दीपोत्सव, उत्तर प्रदेश

के अंतर्गत शामिल माना जाता है। भारत में शादियाँ किसी त्यौहार से कम नहीं हैं विशेष रूप से भारत के आकांक्षी वर्ग में बढ़ोतरी के साथ, जो 'प्रीमियमाइज़ेशन' को बढ़ावा दे रहा है। 'उत्तरायण' भारत में सदियों से मनाया जाता रहा होगा लेकिन गुजरात पर्यटन की वेबसाइट के अनुसार उत्तरायण के आधिकारिक उत्सव के भाग के रूप में अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव की मेजबानी 1989 से अहमदाबाद शहर कर रहा है। यह इसका एक उदाहरण है कि कैसे एक पारम्परिक त्यौहार के महत्व का उपयोग पर्यटन उत्पाद बनाने और एनआरआई समुदाय सहित पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। विरासत और रूट्स पर्यटन उन यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो अपने परिवार की जड़ों की तलाश कर रहे हैं।

लोमिने (2007) में उल्लेख किया गया है कि पुरानी यादें अतीत की लालसा है जो विरासत पर्यटन की मांग समझने में मदद करती हैं और उसके बाद होने वाले आयोजनों और आकर्षणों की संख्या को समझना सामाजिक इतिहास से जुड़ा हुआ है। कुछ उदाहरणों में, नॉस्टल्जिया यानी विषाद को प्रवासी भारतीयों के साथ भी जोड़ा गया है; पर्यटन के साथ प्रवास उन स्थानों पर जाने का अवसर है जहां आप रहते थे। नोस्टाल्जिया पर्यटन सीधे तौर पर सामाजिक पहचान से जुड़ा है, जो पर्यटन को एक शक्तिशाली अस्तित्व संबंधी अनुभव बनाता है।

लेह, लद्दाख में आयोजित होने वाला सिंधु दर्शन उत्सव (1997 से आरम्भ) बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करता है। यह सिंधु नदी का उत्सव है, जिसे 'सिंधु' घाटी सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है (भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्रारंभिक ज्ञात शहरी संस्कृति)।

त्यौहार के माध्यम से साहसिक और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा : 'मौसमी पर्यटन' यानी पर्यटन में मांग के उतार-चढ़ाव को दूर करने के लिए, भारत को 365 दिनों के गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने और विशिष्ट रुचि के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए 'साहसिक' को प्रचार और विकास के लिए एक विशिष्ट उत्पाद के रूप में पहचाना है। साहसिक पर्यटन एक प्रकार का विशिष्ट पर्यटन है जहां यात्रा में कुछ हद तक जोखिम (वास्तविक या कथित) शामिल होता है और इसके लिए विशेष कौशल और शारीरिक प्रयास की आवश्यकता हो सकती है। यह कोई भी पर्यटन गतिविधि हो सकती है जिसमें शारीरिक गतिविधि, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रकृति से संबंध शामिल हैं। यह ध्यान में रखते हुए कि साहसिक पर्यटन गतिविधियाँ काफी हद तक शहरों से दूर

हैं, साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण पर्यटन की रणनीति भी प्रासंगिक है। भोपाल से कुछ किलोमीटर दूर स्थित खंडवा ज़िले में नर्मदा नदी तट पर हनुवंतिया जल महोत्सव (जो साहसिक पर्यटन पर केन्द्रित है) का आठवां संस्करण 2023 में आयोजित किया गया। यह पर्यटन संसाधन को पर्यटन उत्पाद में परिवर्तित करने का एक उदाहरण है। गुजरात के कच्छ रण उत्सव में रॉक क्लाइम्बिंग, रैपेलिंग आदि जैसी साहसिक पर्यटन गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

त्यौहारों के माध्यम से विरासत को पुनर्जीवित करना : 'विरासत' अतीत में पीढ़ियों से मिली विरासत है। विरासत पर्यटन, जिसे कभी-कभी ऐतिहासिक पर्यटन भी कहा जाता है, में विशेष रूप से सांस्कृतिक विरासत पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह ऐतिहासिक आकर्षणों जैसे स्मारकों, अतीत की घटनाओं के साथ-साथ परंपराओं से सम्बद्ध महत्वपूर्ण स्थलों आदि में यात्रियों की रुचि को पूरा करता है। इस विरासत के लिए नॉस्टेल्जिया कई पर्यटकों के लिए एक प्रेरणा स्थल है। यूनेस्को विश्व धरोहर सम्मेलन सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के बारे में बात करता है। भारत में 42 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं। भारत में स्थित अनेक सांस्कृतिक विरासतों को यूनेस्को की 'अमूर्त' सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया है। कुछ इन अमूर्त पहलुओं के साथ एक उत्सव जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए कुंभ मेला, हिंदुओं के लिए प्रमुख तीर्थस्थल, यूनेस्को की 'अमूर्त' सांस्कृतिक विरासत है। जब कुम्भ मेले का आयोजन होता है तो पर्यटकों की संख्या में काफी इज़ाफ़ा देखा जाता है। अमूर्त सूची में एक और प्रविष्टि है दशहरा उत्सव से जुड़ा रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन जो पूरे उत्तर भारत में आयोजित किया जाता है।

हरियाणा राज्य की संस्कृति और परंपरा को प्रदर्शित करने के लिए पिंजौर विरासत उत्सव का आयोजन किया जाता है। जब केरल ने खुद को एक प्रमुख मसाला केंद्र के रूप में स्थापित किया, मुज़िरिस दुनिया में अपनी तरह का सबसे पहला बंदरगाह शहर था। मुजिरिस विरासत परियोजना भारत की सबसे बड़ी संरक्षण परियोजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य एक समृद्ध संस्कृति का संरक्षण करना है जो 3000 वर्ष या उससे अधिक पुरानी है। कोच्चि-मुज़िरिस बिएननेल (कोच्चि में आयोजित) एक कला प्रदर्शनी और उत्सव है जो दक्षिण एशिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा है। हॉर्नबिल महोत्सव नगा विरासत की विशिष्टता और समृद्धि को संरक्षित और पुनर्जीवित करने के लिए नगालैंड में मनाया जाता है। मेदाराम जतारा, तेलंगाना एशिया का सबसे बड़ा आदिवासी मेला है और आदिवासी विरासत को प्रदर्शित करता है।

त्यौहारों के माध्यम से ग्रामीण उपज की बिक्री हेतु सुविधा उपलब्ध कराना : कृषि उपज और संबंधित गतिविधियाँ ग्रामीण पर्यटन आकर्षण हो सकते हैं। उत्तर

हार्नबिल उत्सव, नगालैंड

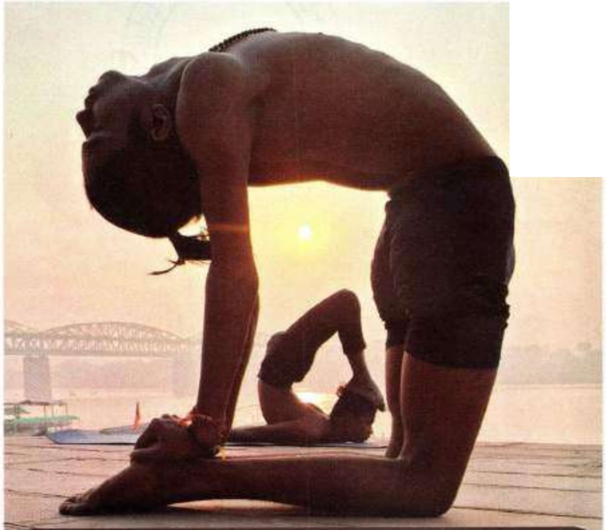

कल्याण गतिविधियों के जरिए आत्मखोज की यात्रा से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

प्रदेश में आमों की विविध किस्मों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। अवध आम ग्रोअर्स एसोसिएशन ने 2013 में पहले यूपी मैंगो फेस्टिवल की परिकल्पना की और उसका आयोजन किया। वाइन पर्यटन को दुनिया भर में विशेष रुचि वाले पर्यटन के बढ़ते क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है। महाराष्ट्र अंगूर के बाग पर्यटन पर पूंजी लगा रहा है। महाराष्ट्र पर्यटन विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार नासिक (इंडियन वाइन कैपिटल) में 29 चालू वाइनरी हैं। सुला वाइनयार्ड्स द्वारा 2008 से शुरू किया गया 'सुलाफेस्ट' भारत में आयोजित होने वाला एक लोकप्रिय वाइन और संगीत उत्सव है जहां आगंतुक अंगूर की खेती, वाइन निर्माण प्रक्रिया, आदि देखने के साथ-साथ वाइन यार्ड में घूमते भी हैं।

त्यौहार के माध्यम से फूलों की खेती और पर्यटन : श्रीनगर ज़िले की वेबसाइट के अनुसार, इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप गार्डन एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन है, जो डल झील की खूबसूरत दृश्यावली के साथ ज़बरवान रेंज की तलहटी पर स्थित है। कश्मीर घाटी में फूलों की खेती और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इस गार्डन को 2007 में खोला गया था। ट्यूलिप उत्सव (वसंत ऋतु की शुरुआत के दौरान आयोजित) एक वार्षिक उत्सव है जिसका उद्देश्य सरकार द्वारा पर्यटन प्रयासों के एक भाग के रूप में उद्यान में फूलों की विविधता को प्रदर्शित करना है।

त्यौहारों के माध्यम से भारतीय कला और 'प्रामाणिकता' को कायम रखना : अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द टूरिस्ट' में डीन मैककैनेल का कहना है कि पर्यटन प्रामाणिकता की खोज है। उन्होंने इसमें कहा है कि समकालीन समाज में अलगाव, सतहीपन, मोहभंग आदि की भावनाएं हावी हैं और इसके परिणामस्वरूप बहुत से लोग घूमने और दर्शनीय स्थलों की यात्रा पर जाते हैं ताकि कुछ प्रामाणिक अनुभव खोजें। वे अतीत और भूली हुई जड़ों तथा विरासत से दोबारा जुड़ने के लिए ग्रामीण

उत्तर प्रदेश में आयोजित एक आम महोत्सव के दौरान आम खाने की प्रतियोगिता

खेल उत्सव, किला रायपुर, पंजाब

इलाकों और दूरदराज के स्थानों की यात्रा करते हैं जहां स्थानीय लोगों की जीवनशैली आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृति से दूषित नहीं हुई है।

मेले और त्यौहार संपूर्ण साधन हैं जिसके ज़रिए पर्यटक यात्रा कार्यक्रम में प्रामाणिकता का यह तत्व हो सकता है। उत्सव पोर्टल के अनुसार, 'विरासत' विरासत और लोकजीवन उत्सव है, जो हर साल देहरादून, उत्तराखंड में आयोजित किया जाता है। यह REACH* (कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए ग्रामीण उद्यमिता) द्वारा पिछले 24 साल से आयोजित किया जा रहा है। यह भारत की कला और संस्कृति को एक अद्वितीय, शिक्षाप्रद प्रारूप में प्रस्तुत करता है जिससे युवा और आगंतुक अपनी जड़ों के बारे में जानने के साथ-साथ कला का आनंद भी उठा सकते हैं। यह कई ग्रामीण कला रूपों (संगीत, नृत्य, शिल्प, चित्रकला, मूर्तिकला, रंगमंच,) को पुनर्जीवित करने में सहायक रहा है। दर्शकों की कमी के कारण कहानी कहने की कला आदि विलुप्त होने के कगार पर हैं। जैसे पारंपरिक त्यौहार ओणम में मुख्य आकर्षण प्रामाणिक नृत्यशैली के रूप में कथकली होती है; इसी तरह लोहड़ी के दौरान भांगड़ा भी प्रामाणिक रूप से प्रसिद्ध है।

*Rural Entrepreneurship for Art and Cultural Heritage

त्यौहारों के माध्यम से कल्याण और खेल पर्यटन:

कल्याण पर्यटन यात्रा किसी की व्यक्तिगत भलाई को बनाए रखने या बढ़ाने के उद्देश्य से जुड़ी होती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हर साल उत्तराखंड के ऋषिकेश में आयोजित होने वाले योग महोत्सव (IYF) की शुरुआत 1999 में एक छोटे महोत्सव के रूप में की गई थी जो अब एक लोकप्रिय अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आकर्षण है। खेल के माध्यम से शारीरिक फिटनेस कल्याण प्राप्त करने का एक लोकप्रिय साधन है। 1983 से आयोजित 'किला रायपुर खेल महोत्सव', जिसे 'ग्रामीण ओलंपिक' के नाम से जाना जाता है, प्रति वर्ष किला रायपुर गाँव, लुधियाना, पंजाब में आयोजित किया जाता है।

निष्कर्ष

त्यौहार अर्थव्यवस्था में समृद्धि लाकर समुदायों के जीवन में सुधार करते हैं; वे समग्र कल्याण और सामाजिक सद्भाव में योगदान करते हैं। मेले और त्यौहार ऐसे पर्यटन उत्पाद हैं जो पर्यटकों के लिए एक साथ समय बिताने, एक क्षेत्र से जुड़ने और संस्कृतियों की विविधता का अनुभव करने के अवसर पैदा करते हैं। यदि अच्छी तरह से प्रबंधित किया जाए, तो आगंतुकों को आकर्षित करके वे एक सकारात्मक छवि बनाते हैं जिससे गंतव्य प्रचार में मदद मिलती है। ❑

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

ई-रिसोर्स एग्रीगेटर (ईआरए)

के एम्पैनलमेंट के लिए आवेदन आमंत्रित

सरकार के प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान से जुड़ने और उसके ई-प्रकाशनों के विक्रय का सुनहरा अवसर

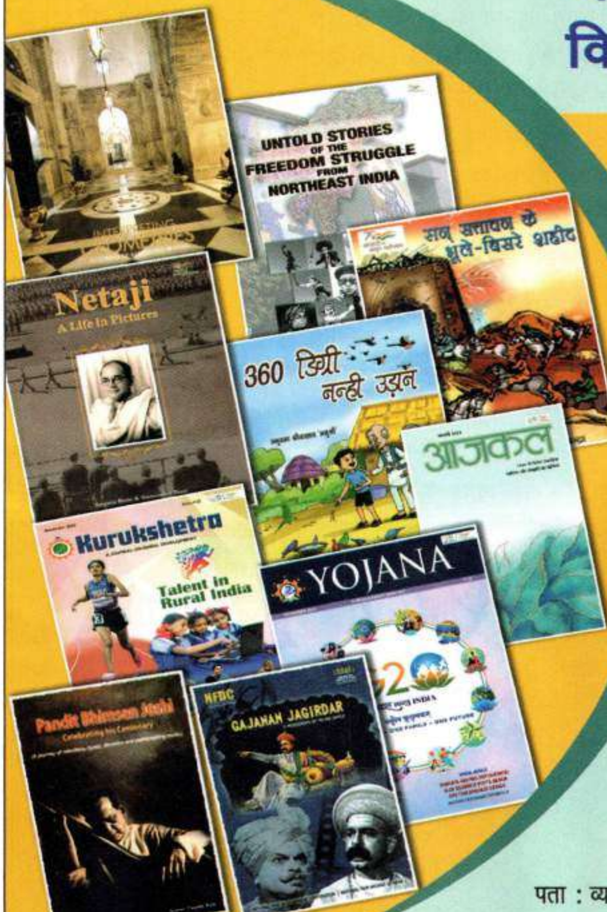

प्रमुख लाभ :-

- प्रकाशन विभाग की लोकप्रिय ई-पुस्तकें और ई-पत्रिकाएं उपलब्ध कराने का अवसर।
- प्राप्त राजस्व में 30% की निश्चित हिस्सेदारी।
- किसी निवेश की आवश्यकता नहीं।
- मात्र 2000 रुपये का पंजीकरण शुल्क।

अधिक जानकारी के लिए देखें –
www.publicationsdivision.nic.in

संपर्क करें
फोन : 011 24365609
ईमेल : businesswng@gmail.com
पता : व्यापार स्कंध, कमरा संख्या–758, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

ग्रामीण पर्यटन के विविध रंग

'इको विलेज' मालारिकल

शहरी जीवन की आपाधापी से दूर, कोट्टायम ज़िले के मध्य में एक अनोखा गाँव मौजूद है। अंतहीन धान के खेतों के बीच ग्रामीण जीवन का एक सुखद अनुभव है। इसके बैकवॉटर का विशाल विस्तार और आंतरिक प्राकृतिक सौंदर्य धीरे-धीरे

उन पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है जो अपनी दिनचर्या से पूरी तरह अलग होकर प्रकृति के साथ समय बिताने की तलाश में हैं। मालारिकल आपको गुलाबी रंग के लुभावने रंगों से भी लुभाता है। जल लिली (निम्फिया स्टेलटा या स्थानीय भाषा में अम्बल) मानसून की बारिश के अंत के दौरान इलाके का स्वागत करती है, जो आमतौर पर सितंबर और अक्टूबर के बीच होती है। सुखद गुलाबी रंग का कालीन पूरे क्षेत्र को एक लुभावनी संरचना में ढक देता है जिसे केवल शब्दों से समझाना मुश्किल है। वे 600 एकड़ भूमि में फैले हुए हैं, और स्थानीय लोगों की सलाह है कि इस घटना को देखने का सबसे अच्छा समय सुबह और शाम है। ये प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर दृश्य अकेले ही हर साल बड़ी भीड़ को आकर्षित करते हैं। दिन की शुरुआत जल कुमुदिनी के साथ करना, और इसे नयनाभिरामि सूर्योदय के साथ समाप्त करना किसी दैवीय अनुभव से कम नहीं है। ज़िला पर्यटन संवर्धन परिषद (डीटीपीसी), कोट्टायम, जल्द ही नौकायन और ज़िम्मेदार पर्यटन गतिविधियों को जैसे ग्रामीण पर्यटन विकल्प जोड़ेगी। ये निस्संदेह मालारिकल में आगंतुकों के अनुभव को और बढ़ाएंगे।

मडला, मध्य प्रदेश

क्षेत्र के एक किलोमीटर के भीतर एक नदी, पहाड़ और जंगल के साथ, मडला भारत का एक अनूठा शहर है जिसमें एक किलोमीटर के भीतर सभी तीन प्राकृतिक भौगोलिक विशेषताएं हैं। यह शहर पूरे एशिया की सबसे स्वच्छ नदी कर्णावती

(केन) से होकर गुज़रता है। समुदाय में पर्यावरण संबंधी जागरूकता का स्तर आश्चर्यजनक है। पांडव जलप्रपात और गुफाएं, जो पन्ना राष्ट्रीय उद्यान और खजुराहो-यूनेस्को साइट के करीब हैं, मडला से केवल 10 किलोमीटर दूर हैं। लोक संगीत और नृत्य, क्षेत्रीय उत्सव और बुंदेलखंड व्यंजन गाँव की अमूर्त विरासत के कुछ उदाहरण हैं। गाँव का चरित्र अभी भी आवासों की वास्तुकला में मौजूद है। आवासों की दीवारों पर भित्ति चित्र क्षेत्र की कला और संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। गाँव का चरित्र अभी भी आवासों की वास्तुकला में मौजूद है। आवासों की दीवारों पर भित्ति चित्रकला और संस्कृति के माध्यम से ग्रामीण जीवन को दर्शाते हैं। यह गाँव एक अद्वितीय पर्यटन स्थल है क्योंकि यह ग्रामीण पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन और विरासत पर्यटन सभी का अनुभव एक साथ प्रदान करता है।

आंध्र प्रदेश का सबसे ऊंचा झरना तालाकोना

270 फीट की ऊंचाई से गिरता हुआ तालाकोना आंध्र प्रदेश का सबसे ऊंचा झरना है। झरने के आसपास के जंगलों को एक पारिस्थितिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। नतीजतन, यह बड़े पैमाने पर [illegible] से बाहर

वेंकटेश्वर राष्ट्रीय उद्यान का एक सुलभ हिस्सा है। सेसाचलम के पहाड़ी इलाके तक चढ़ने के लिए तालाकोना की सड़क घने जंगलों के बीच से गुजरती है। झरने से कुछ किलोमीटर पहले एक चौकी है, जहाँ प्रवेश शुल्क लिया जाता है। आगे बाईं ओर एक मोड़ आपको समुदाय-आधारित इकोटूरिज्म (सीबीईटी) योजना के तहत स्थापित गेस्टहाउस परिसर में ले जाता है। यह परिसर, एक छोटे से जल निकाय के तट पर स्थित है और ऊंचे पेड़ों की छतरी से ढका हुआ है। जंगल से घिरा और सिकाडों की गुंजन से सजीव यह गेस्टहाउस, एक अद्वितीय वन अनुभव प्रदान करता है।

मेघालय का स्वच्छ गाँव रिवाई

रिवाई गाँव राज्य की राजधानी शिलांग से लगभग 82 किमी. और मावलिननॉन्ग से लगभग 8 किमी. दूर स्थित है, जिसे आइसा का सबसे स्वच्छ गाँव माना जाता है। रिवाई अपने आप में रोबाब टेंगा (साइट्रस मैक्सिमा) के पेड़ों से भरा एक

साफ-सुथरा गाँव है, जो पके फलों से लदे होते हैं (अधिकांश स्वाभिमानी असमिया आपको इस फल के बारे में कुछ पुरानी कहानियाँ बताने में सक्षम होंगे)। स्वच्छता और साफ-सफाई पर ज़ोर यहां हर तरफ देखा जा सकता है। यहां तक कि कूड़ेदान भी बांस के होते हैं।

राधानगर समुद्र तट

एशिया के सबसे आश्चर्यजनक समुद्र तटों में से एक है। यह शानदार समुद्र तट, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के हैवलॉक द्वीप में पाया जाता है, अपने उत्कृष्ट और शांत वातावरण के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है।

पूवर अभयारण्य

पूवर द्वीप एकांत चाहने वालों के लिए एक अभयारण्य है। यह छोटा-सा द्वीप अरब सागर के संगम के पास बैकवॉटर और नेय्यर नदी से घिरा है। पूवर त्रिवेन्द्रम से लगभग 30 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है और यहां केवल नाव द्वारा ही पहुंचा जा सकता है। कोवलम बीच सिर्फ 12 किमी. दूर है। वहां से थोड़ी-सी पैदल दूरी आपको पारंपरिक मार्शल आर्ट के लिए प्रसिद्ध जगह पर ले जाएगी। इस क्षेत्र में केरल की अनूठी आत्मरक्षा प्रणाली कलारीपयट्टु को बनाए रखने की सदियों पुरानी परंपरा है।

SUBSCRIPTION FORM

Tick (✓) appropriate column

Print version Plans

6 months	Rs. 265/-	( )
1 year	Rs. 530/-	( )
2 Year	Rs. 1000/-	( )
3 Year	Rs. 1400/-	( )

E-version Plans

6 months	Rs. 200/-	( )
1 year	Rs. 400/-	( )
2 Year	Rs. 750/-	( )
3 Year	Rs. 1050/-	( )

Employment News
WEEKLY
India's Critical Minerals Mission
Driving Sustainability & Self Reliance
HAPPY NEW YEAR 2024

( ) **Employment News**

( ) **Rozgar Samachar–Hindi**

( ) **Rozgar Samachar–Urdu**

Demand Draft/Cheque should be in favour of 'Employment News'. Attach original copy of Demand Draft/Cheque with the form

Please fill all the details in CAPITAL Letters

Name: ____________________

Postal Address: ____________________

____________________ Pin Code: __________

Landline Ph.: ____________________ Mobile: ____________________

Email Id: ____________________

Send the filled form to:

Employment News,
Room No. 783, 7th Floor,
Soochna Bhawan,
Lodhi Road, New Delhi-110003

For daily updates:

www.employmentnews.gov.in
www.rozgarsamachar.gov.in

Online payment facility is also available for both plans.

Scan & Pay

@Employ_News

@EmploymentNews

www.eneversion.nic.in